हिंदी

कक्षा –2

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : **राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल**
2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाऐगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्व है। विद्यालयीय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र के रूप में हैं। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सरल, सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, चित्रों एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर सकें। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सके।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इस पुस्तक को पूर्ण कराने तक ही सीमित नहीं रखें, अपितु पाठ्यक्रम एवं अपने अनुभव को आधार बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करें कि बालक को सीखने के पर्याप्त अवसर मिले एवं विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर पाठ्यपुस्तक विकास में सहयोग के लिए उन समस्त राजकीय एवं निजी संस्थानों, संगठनों यथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राज्य सरकार, बिहार सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, विद्याभवन उदयपुर का पुस्तकालय एवं लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा एवं आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी. एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर।

राजस्थान सरकार का सतत् मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव संस्थान को प्राप्त होते रहे हैं। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनिसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है। संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है। अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक : विनीता बोहरा, निदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

मुख्य समन्वयक : नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

समन्वयक : वनिता वागरेचा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

लेखन समिति : यशोदा दशोरा, प्रधानाध्यापिका रा.बा.उ.प्रा.वि. प्रतापनगर प्रथम उदयपुर, (संयोजक)

डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. ड्योढ़ी, जयपुर

तोषी सुखवाल, अध्यापिका, के.जी.बी.वि. मावली, उदयपुर

डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक रा.उ.प्रा.वि. लकापा, सलूम्बर, उदयपुर

मीनाक्षी शर्मा, अध्यापिका, रा.बा.उ.प्रा.वि. जवाहरनगर,उदयपुर

विमलेश कुमार शर्मा, अध्यापक रा.प्रा.वि., ढाणी रामगढ़, सवाई माधोपुर

दिनेश वैष्णव, सन्दर्भ व्यक्ति डाइट, बाराँ

राजेश गहलोत, प्रधानाध्यापक, आदर्श विद्यामंदिर, पाली

शिवमृदुल, से.नि. व्याख्याता, चित्तौडगढ़

हरिवल्लभ बोहरा, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. छत्रैल, जैसलमेर

आवरण एवं साज सज्जा : डॉ. जगदीश कुमावत, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

चित्रांकन : निर्मल कुमार टेलर, स्वतंत्र कलाकार, उदयपुर

तकनीकी सहायक : हेमन्त आमेटा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

दीपिका तलेसरा, क.लि. एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

अभिनव पण्ड्या, क.लि. एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सिमेटिक्स माईनिंग प्रा.लि., देहरादून, उत्तराखण्ड

शिक्षकों से...

कक्षा एक में बच्चे चित्रों, कविताओं, अभ्यासकार्य एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से वर्णों की पहचान करने, उनको समझने व लिखकर अभिव्यक्त करने में सक्षम हो चुके होते हैं।

कक्षा दो में बच्चे को पूर्व ज्ञान के साथ जोड़ने के लिए व पुनरावलोकन गतिविधियों को पुस्तक में पहले स्थान दिया गया है। ताकि बच्चा कक्षा एक में सीखे गए ज्ञान का स्मरण कर आगे बढ़ सके।

इस पुस्तक में बच्चे की भाषायी क्षमता को विकसित करने उसकी जिज्ञासा, तर्कशक्ति, स्वाभाविक रूचि के माध्यम से आगे बढ़ते हुए मौखिक अभिव्यक्ति के साथ साथ लिखित अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान करते हुए बच्चे को कक्षा तीन हेतु तैयार करने का प्रयास किया है।

बहुभाषिकता को भाषा के विकास के एक संसाधन के रूप मे उपयोग किया गया है। पुस्तक में अनेक ऐसे अवसर उपलब्ध कराए गए हैं, जहाँ स्थानीय भाषा को हिंदी में तथा हिंदी के शब्दों को स्थानीय भाषा में बताने का प्रयास किया गया है। बच्चे जब कक्षा में स्थानीय भाषा में बात करते हैं या शिक्षक द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब अपनी भाषा में देते हैं तो शिक्षक उनके द्वारा दिये गए जवाब का सम्मान करें। यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि हम स्थानीय बोली को भी भाषा के रूप में देख रहे हैं।

बहुरंगी चित्रों, गीत, कविता, पहेली के माध्यम से पाठ्य सामग्री को रोचक बनाते हुए बच्चे में तार्किक क्षमता व खोज की प्रवृत्ति का विकास हो इस बात का भी ध्यान रखा गया है।पुस्तक में ऐसे अनेक अवसर दिये गये हैं जिनसे बच्चों में चित्र बनाने,रंग भरने,गीत गाने,अभिनय करने आदि कौशलों को विकसित किया जा सकता है। शिक्षक को थोडा–सा सचेत रहने की आवश्यकता है।

पाठ्यसामग्री के माध्यम से बच्चे को न केवल विषयवस्तु वरन परिवेश से जोड़ने राजस्थान की संस्कृति, गौरव, महिला सशक्तिकरण व साहसिकता का भी परिचय कराने का प्रयास किया है।

पुस्तक में विषयवस्तु की विविधता के साथ अभ्यास कार्य विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से करवाया जाकर बच्चों की खोज परक क्षमता जिज्ञासा व अपने अनुभवों को आगे

बढ़ाने का पूर्ण अवसर दिया गया है। पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य है बच्चों में संवैधानिक मूल्यों की समझ पैदा करना। इस पुस्तक में दी गई विषयवस्तु के माध्यम से बच्चों को इन मूल्यों को स्वाभाविक रूप से समझाने का प्रयास किया गया है। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे बच्चों की इन मूल्यों को तार्किकता के साथ समझाने में मदद करें।

पढ़ने के प्रति रूचि पैदा हो इस हेतु पाठों के अतिरिक्त पाठ्यसामग्री भी दी गयी है, जिसे पढ़कर बच्चे आनंद उठा सकें। बच्चों द्वारा इस सामग्री को पढ़ लेने के बाद शिक्षक केवल सामग्री पर बातचीत करें और बच्चों के सवालों का सहजता से जवाब दें। शिक्षक इस बात का ध्यान रखें कि इस सामग्री पर बच्चों से अन्य पाठों की तरह किसी तरह का सवाल जवाब नहीं करें।

पुस्तक में बच्चों को अपनी सृजनशीलता एवं रचनात्मकता को विकसित करने एवं विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इसके लिए बच्चों को चित्र बनाने रंग भरने अपनी बात कहने आदि के भी पर्याप्त अवसर प्रदान किये गए हैं।

पुस्तक में दी गई सामग्री (चित्र,कहानी,कविता) पर समझ बनाना पुस्तक का एक उद्देश्य है। पुस्तक का मूल उद्देश्य है इस सामग्री के माध्यम से भाषायी क्षमताओं को विकसित करना। पुस्तक पर काम करते समय यह ध्यान देना है कि सामग्री के माध्यम से भाषायी क्षमताओं को किस प्रकार विकसित किया जा सकता है। शिक्षक से अपेक्षा है कि पाठो में दी गई गतिविधियों के साथ–साथ भाषायी क्षमताओं को विकसित करने के लिए अन्य गतिविधियाँ भी अपने स्तर पर तैयार करें और बच्चों के साथ उनका उपयोग करें। इस बात का ध्यान रखें कि कविताओं/कहानियों को पूरे हाव–भाव,लय एवं उतार–चढाव के साथ गाएँ/सुनाएँ ताकि कहानी/कविता का भाव बच्चों को स्पष्ट हो जाए।

शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों से अपेक्षा है कि बच्चे के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति, अनुभव, तार्किक क्षमता, चिन्तन व जिज्ञासा का समाधान करते हुए आगे बढा़वे एवं इन सबके लिए बच्चे को सदैव प्रोत्साहित करते रहे ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं०
	पुनरावृत्ति गतिविधियाँ		1
	परिचय		5
	बिल्ली और चूहा	चित्रकथा	6
1	हमारी चाह	कविता	8
2	खट्टे अंगूर	कहानी	13
3	छोटे से बड़े	कविता	19
	आओ हँस ले (केवल पढ़ने के लिए)	चुटकले	24
4	मेघा पानी दे	कविता	25
5	स्नान	वार्तालाप	32
6	तिरंगा	कविता	39
	अबलक घोड़ी (केवल पढ़ने के लिए)	कविता	47
7	रक्षाबंधन	निबंध	48
8	शीला का साहस	कहानी	55
9	सूरज का रूमाल	कहानी	60
	बूझो तो जानें (केवल पढ़ने के लिए)	पहेलियाँ	69
10	रेल का खेल	कविता	70
11	शेर और चूहा	कहानी	75
12	बबलू बदल गया	कहानी	81
	कान पकड़ लो, नाक पकड़ लो (केवल पढ़ने के लिए)	खेल	86
13	चतुर चिड़िया	कहानी	88
14	चार चने	कविता	95
15	सपना सच हो गया	कहानी	101
	उतावलो सो बावलो (केवल पढ़ने के लिए)	लोककथा	106
16	चाँद का कुरता	कविता	107

पुनरावृत्ति गतिविधियाँ

1-घेरे में दिए गए वर्ण के समान वर्ण पर घेरा ◯ बनाइए

(म)	–	र	म	भ	य	प	म
(च)	–	फ	च	क	ह	च	छ
(ट)	–	ट	ठ	द	ट	ढ	ट
(प)	–	ष	प	य	म	प	य
(क)	–	क	फ	प	छ	म	क
(न)	–	च	र	न	स	न	च
(स)	–	श	घ	स	प	स	म

2. चित्रों को उनके नाम से मिलाएँ

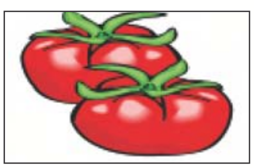

तितली

घोड़ा

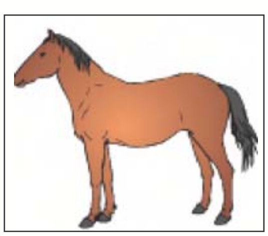

टमाटर

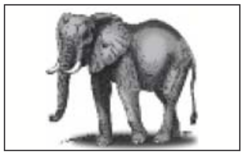

बकरी

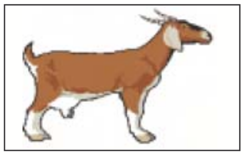

हाथी

3. दिए गए वर्णों से शुरू होने वाले शब्द लिखें

अ	–	....	....	....
च	–	....	....	....
म	–	....	....	....
र	–	....	....	....
क	–	....	....	....
ब	–	....	....	....
ह	–	....	....	....

4. दिए गए अधूरे शब्दों को पूरा करें

बत	अ .... र	.... ल	मछ ....
.... ताब	खर .... श	.... ड़	क .... तर
ति .... ली	ग	ट .... टर	ग ....

5. चित्रों को पहचान कर उनके नाम लिखें

(गाय, बंदर, टमाटर, तितली, आम, पतंग)

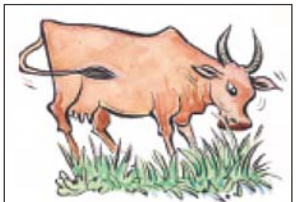

....

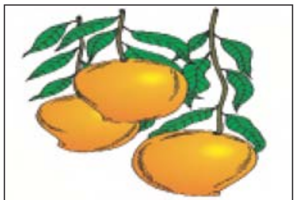

....

....

....

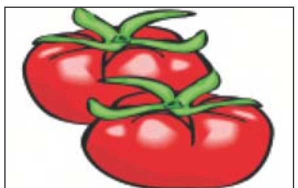

....

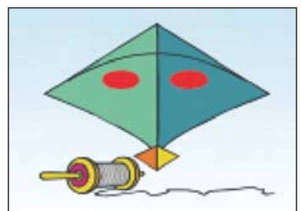

....

6. दिए गए शब्दों में अनुस्वार व अनुनासिक लगे वर्णों पर घेरा ○ बनाइए :–

पतंग,	चाँद,	हंस,	मिठाइयाँ,	परंपरा,
पहुँचा,	झाड़ियाँ,	प्रशंसा	हुमायूँ	गंगा

चित्र में क्या हो रहा है, उसके सामने लिखें

....

....

....

....

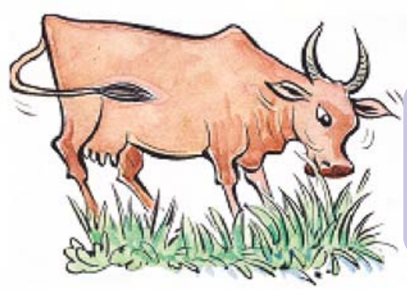

....

....

....

....

वाह! सब एक साथ

परिचय

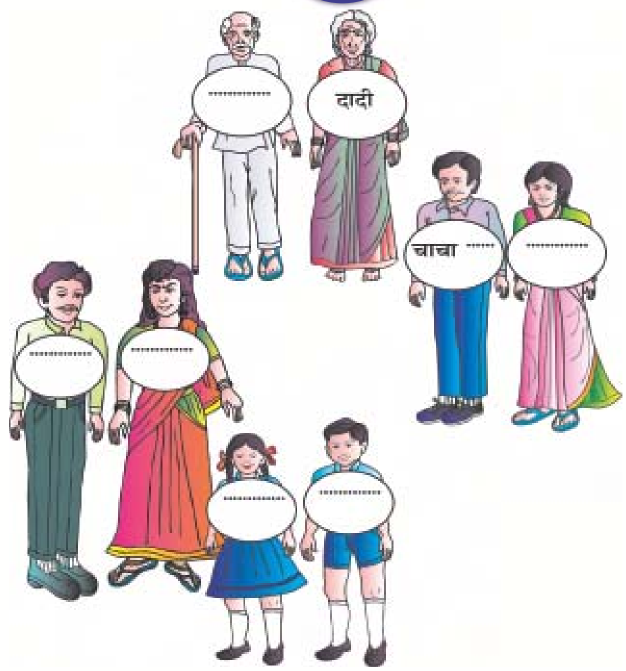

मेरा नाम...है।

मेरी माता का नाम...है।

मेरे पिता का नाम..है।

हम दादा–दादी के ....रहते हैं।

हमारे चाचा–चाची भी...में रहते हैं।

मेरे भाई का नाम..है।

मेरी बहन का नाम..है।

हम सब एक ही...में रहते हैं।

चर्चा करें

बिल्ली और चूहा

(1)

(2)

(3)

(4)

निर्देश :– चित्रों पर बातचीत करें और कहानी बनवाएँ।

(5)

(6)

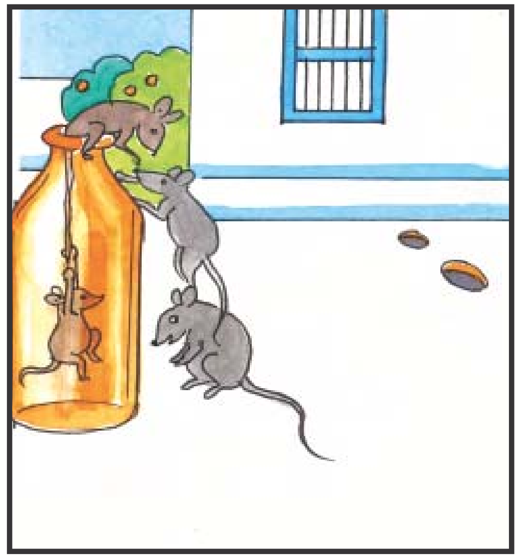

(7)

(8)

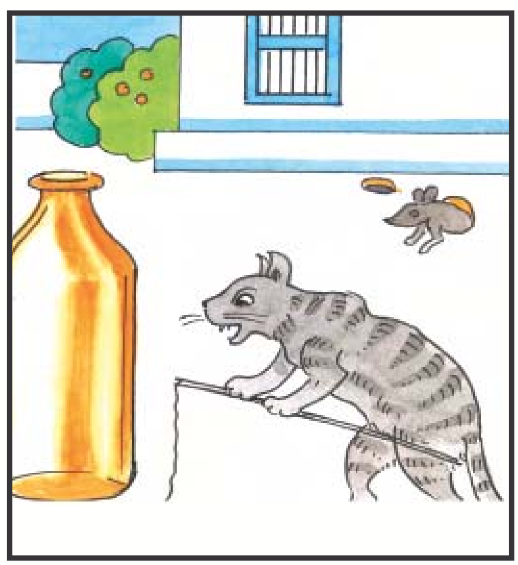

1

हमारी चाह

ईश्वर हमारे, यही हमारी चाह,
तुम दिखाना हमें वह राह,
कभी करें न किसी से डाह,
मिलकर कहें वाह! वाह!!

माता–पिता हों हमारे साथ,
हम मानें उनकी सब बात,
मिल–जुलकर रहें सब साथ,
ऊँच–नीच की करें न बात।

प्रभु, हमको दो यह वरदान,
पढ़–लिखकर हम बनें महान,
झूठ को दें कभी न मान,
सच्चाई का करें सम्मान।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

ईश्वर	–	भगवान
चाह	–	इच्छा
राह	–	रास्ता,मार्ग
डाह	–	ईर्ष्या
मान	–	इज्जत
सम्मान	–	आदर

1. पढ़ें और समझें

दिन निकल आया है।

पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।

चिड़िया चहचहा रही है।

बगिया महक रही है।

हम सब ईश्वर के गुण गाएँ।

2. पढ़ें और लिखें

(क) ईश्वर .... (ख) वरदान ....

(ग) महान .... (घ) सच्चाई ....

(ङ) सम्मान .... (च) झूठ ....

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

(क) बच्चे किससे प्रार्थना कर रहे हैं ?

(अ) अध्यापक से (ब) माता–पिता से

(स) गुरु से (द) ईश्वर से ( )

(ख) बच्चे कौन–सा वरदान नहीं माँग रहे हैं ?

(अ) प्रातः जल्दी उठने का

(ब) पढ़–लिखकर महान बनने का

(स) दिन भर खेलने कूदने का

(द) झूठ बोलने का ( )

(ग) बच्चे पढ़–लिखकर क्या करना चाहते हैं ?

(अ) महान बनना (ब) आलसी बनना

(स) शैतान बनना (द) बुरा बनना ( )

4. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए

(क) .... हमारे, यही हमारी चाह। (ईश्वर/पिता)

(ख) मिल–जुलकर रहें सब साथ ....। (हाथ/साथ)

(ग) झूठ को दें .... न मान। (कभी/हमेशा)

(घ) सच्चाई का करें ....। (असम्मान/सम्मान)

5. सोचें और बताएँ

(क) बच्चे ईश्वर से क्या इच्छा कर रहे हैं ?

(ख) झूठ और सच्चाई के लिए बच्चे क्या कहते हैं ?

6. इन चित्रों को पहचानकर उनके नाम लिखें

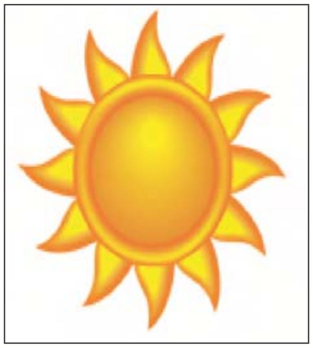 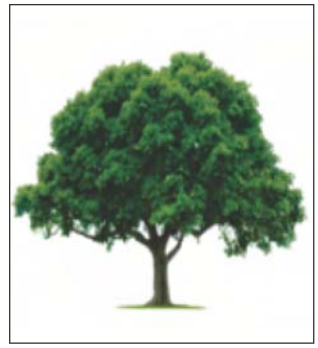

....

7. इस कविता को याद कर कक्षा में सुनाएँ

चिड़िया मुझे बना दो राम,
सुंदर पंख लगा दो राम,
डाल–डाल पर जाऊँगी,
मीठे गीत सुनाऊँगी,
फर–फर–फर उड़ जाऊँगी।

8. सुंदर लेख लिखें

हमेशा बड़ों का आदर करें।

....

....

....

....

....

9. जब आप प्रार्थना करते हैं, तो क्या माँगते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए।

10. इस चित्र में पेंसिल घुमाकर रंग भरिए।

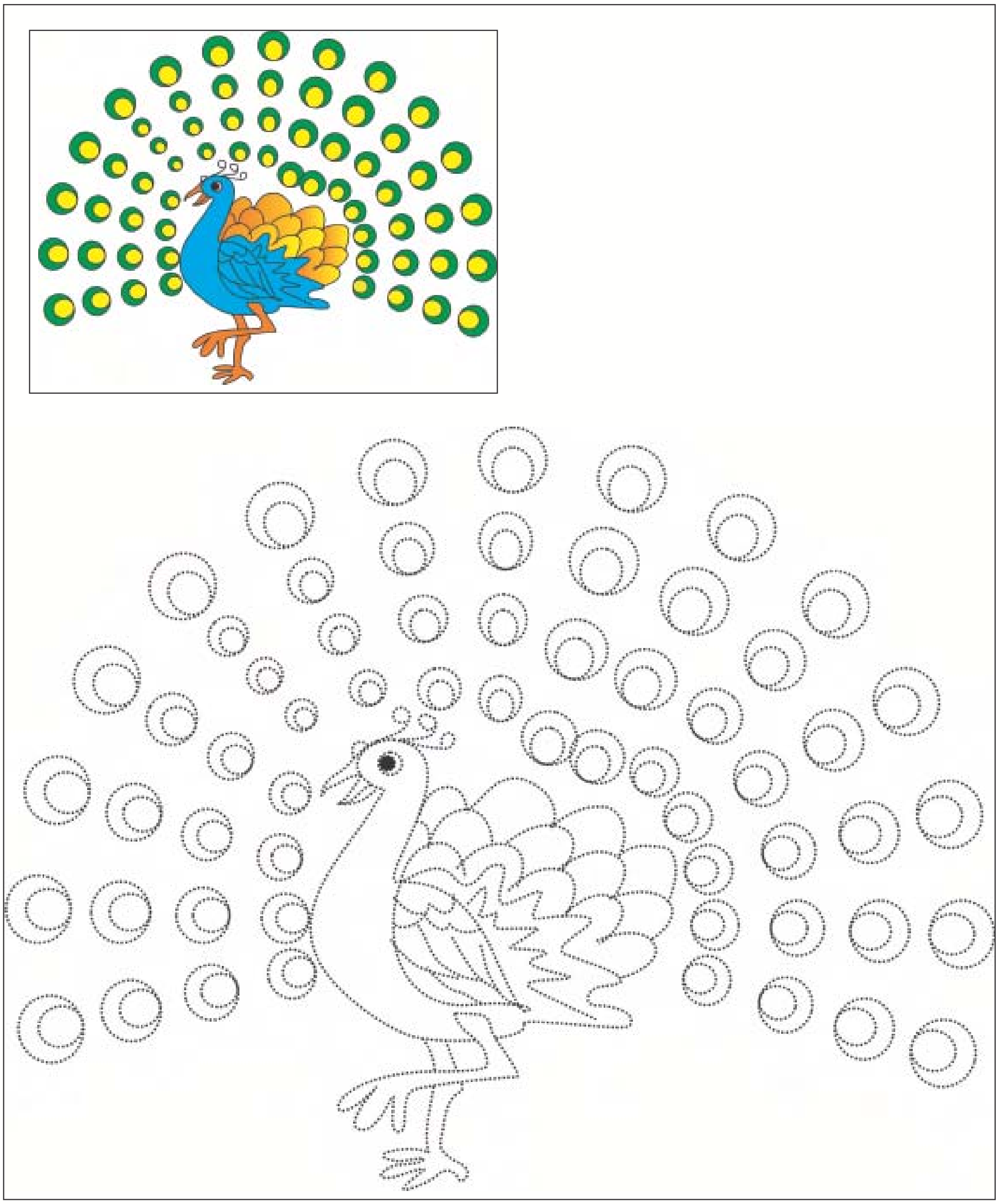

2 खट्टे अंगूर

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी। वह भोजन की खोज में इधर–उधर भटकने लगी। वह एक बाग में जा पहुँची। वहाँ उसने एक बेल पर अंगूर लगे देखे। लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया। वह अंगूर तोड़ने के लिए बार–बार उछलने लगी, पर अंगूर बहुत ऊँचाई पर थे। वह वहाँ तक नहीं पहुँच पाई और निराश हो गई। वह अपने मन को यह कहकर समझाने लगी–अंगूर तो खट्टे हैं। इनको खाने से मैं बीमार हो जाऊँगी।

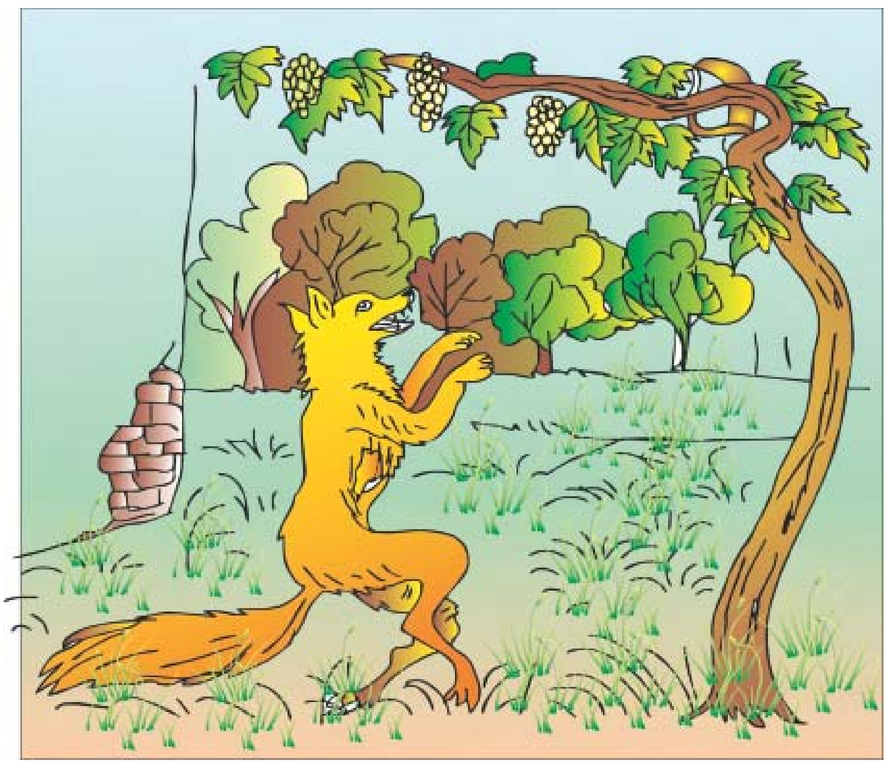

जब हमें कोई चीज़ नहीं मिलती तब हम उसकी बुराई बताकर मन को दिलासा दे देते हैं।

अभ्यास—कार्य

शब्द—अर्थ

खोज — तलाश, ढूँढना

भटकना — मारा—मारा फिरना

उछलना — कूदना

निराश — बे उम्मीद

1. पढ़ें, समझें और लिखें

उछलना, भटकना, लोमड़ी, चीज़, ऊँचाई

2. सोचें और बताएँ

1. भोजन की तलाश में कौन भटक रही थी ?
2. लोमड़ी ने बेल पर क्या देखे ?
3. लोमड़ी निराश क्यों हो गई ?

3. सही वाक्य के आगे सही (✓) व गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाएँ

(क) लोमड़ी अंगूर तोड़ने के लिए बार—बार उछलने लगी। ( )

(ख) लोमड़ी बहुत प्यासी थी। ( )

(ग) अंगूर खट्टे हैं। ( )

(घ) लोमड़ी ने बेल पर फूल देखे। ( )

4. उचित शब्दों का उपयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए

(बीमार, ऊँचाई, लोमड़ी, मुँह)

(क) एक .... बहुत भूखी थी।

(ख) लोमड़ी के .... में पानी आ गया।

(ग) पर अंगूर बहुत .... पर थे।

(घ) इनके खाने से मैं .... हो जाऊँगी।

5. जो शब्द बेमेल है, उस पर घेरा ◯ बनाएँ

(क)	अंगूर,	लोमड़ी	केला,	अनार,
(ख)	खट्टा,	मीठा,	बबलू,	खारा,
(ग)	मुँह,	हाथ,	पैर,	नीला

6. सुंदर लेख लिखें

हमेशा बड़ों का आदर करें।

....

....

....

....

....

....

....

7. एक–अनेक को पहचानें

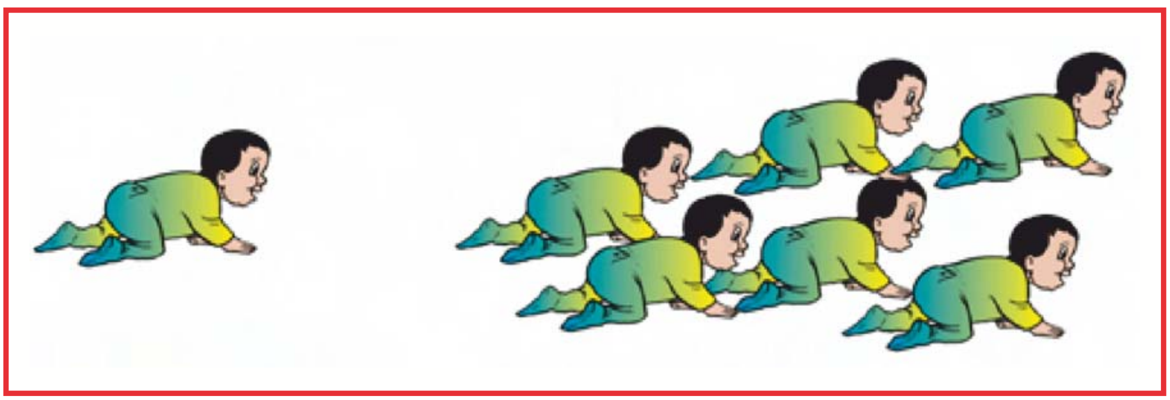

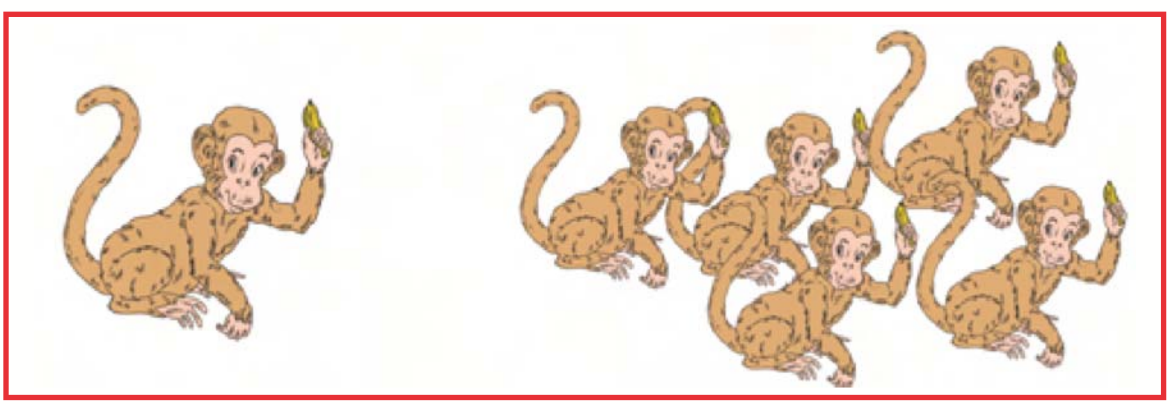

8. चित्र पर पेंसिल घुमाएँ व रंग भरें

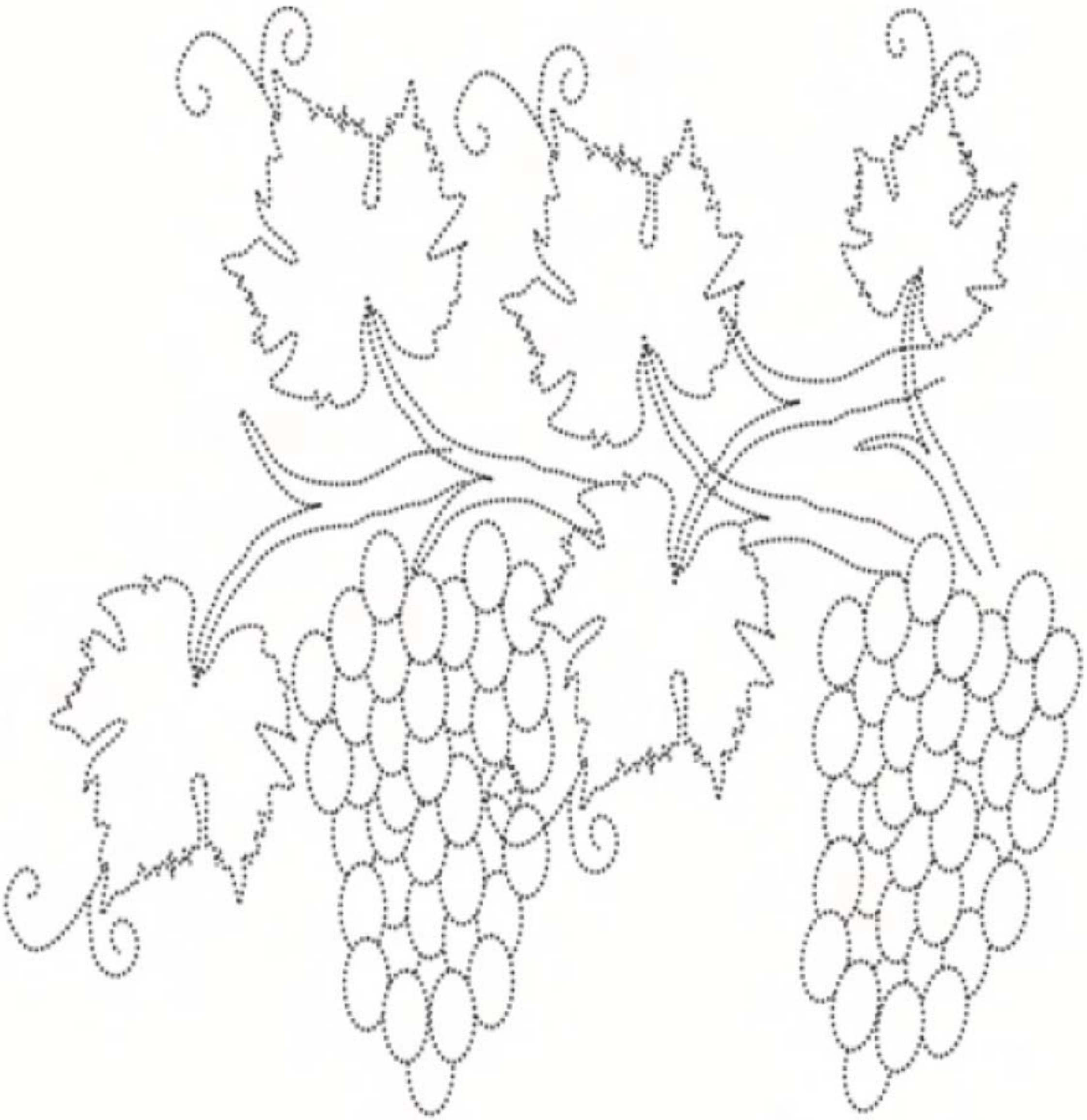

आइए, बनाएँ मुखौटे

क्या आपने नौटंकी, रामलीला या नाटक देखा है। उनमें कलाकार अलग–अलग वेश, धरते हैं। सर्कस में जोकर तथा गाँव–शहर में घूमते बहुरूपिए भी सबको हँसाने के लिए तरह–तरह के वेश धरते हैं। आप भी कागजों को काटकर, चिपकाकर और रंग भरकर तरह–तरह के मुखौटे बना सकते हैं।

3

छोटे से बड़े

एक दिन बोली मुझसे नानी,
मैं कहती तुम सुनो कहानी।
एक खेत बिन जुता पड़ा था,
ऊबड़–खाबड़ बहुत बड़ा था।।

कोई चिड़िया बीज उठाकर,
उड़ती–उड़ती गई डालकर।
हवा डराती, धूप जलाती,
मिट्टी उसको खूब दबाती।।

मिट्टी की गोदी में रहकर,
सूरज की किरणों में जलकर।
कहा बीज ने–हाय अकेला,
पर न डरूँगा, भले अकेला।।

कुछ दिन बीते, अंकुर फूटे,
कोमल–कोमल पत्ते फूटे।
बीज बन गया पौधा प्यारा,
हरा–भरा लहराता, प्यारा।।

पौधे से बढ़, पेड़ कहाया,
दूर–दूर तक फैली छाया।
बस, जितने भी बड़े बने हैं,
छोटे से बढ़, बड़े बने हैं।।

शब्द–अर्थ

उबड़–खाबड़	–	ऊँचा–नीचा
खूब	–	ज्यादा
कोमल	–	ताजा, मुलायम
अंकुर	–	बीज के उगने की पहली क्रिया

1. पढ़ें और समझें

हरा–भरा	दूर–दूर	उछल–कूद
ऊबड़–खाबड़	उड़ती–उड़ती	कोमल–कोमल

2. क्रम जानिए

बीज → अंकुर → पौधा → पेड़

अक्षर → शब्द → वाक्य → पाठ

3. वे जो छोटे से बड़े बनते हैं

मेमना → बकरी   बछड़ा → बैल

....

....

....

4. सोचें और बताएँ

1. पौधा पेड़ कब कहलाया ?
2. बीज पौधा कब बनता है ?

5. इन शब्दों का उपयोग करते हुए रिक्त स्थान भरें

(पेड़, कोमल, छाया, कहानी, अंकुर, नानी)

(क) एक दिन बोली मुझसे .... ।

(ख) मैं कहती तुम सुनो .... ।

(ग) कुछ दिन बीते, ... फूटे।

(घ) .... कोमल पत्ते फूटे।

(ङ) पौधे से बढ़ .... कहाया।

(च) दूर–दूर तक फैली ....।

6. सही वाक्य के आगे सही (✓) व गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाइए

(क) खेत ऊबड़–खाबड़ नहीं था। ( )

(ख) बीज पौधा बन गया था। ( )

(ग) पेड़ की छाया दूर–दूर तक फैली हुई थी। ( )

(घ) पौधा हरा–भरा लहरा रहा था। ( )

.7. सुंदर लेख लिखें

छोटे से बढ़, बड़े बने हैं।

....

....

....

....

8. चित्र देखकर लिखिए कि पेड़ हमें क्या–क्या देते हैं ?

....

....

....

....

....

....

पेड़–पौधे हमारे सच्चे मित्र होते हैं।

केवल पढ़ने के लिए

आओ हँस लें

☺ ''अरे तू स्केल लेकर क्यों सो रही थी ?'' दीदी ने पूजा से पूछा।
आँखें मसलते हुए पूजा बोली, ''ये नापने के लिए कि मुझे कितना लम्बा सपना आता है।''

☺ 'एक टोकरी में दस आम थे उनमें से तीन सड़ गए, तो कितने बचे ?' गुरुजी ने पूछा तो जवाब मिला, 'दस'।

'अरे'। दस कैसे बचेंगे ?

'जो सड़ गए वे भी तो आम ही रहेंगे न। सड़ने के बाद केले थोड़ी बन जाएँगे।'

☺ टीचर : बच्चो, बताओ कि दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए ?

पिन्टू : उसे पी लेना चाहिए।

4

मेघा पानी दे

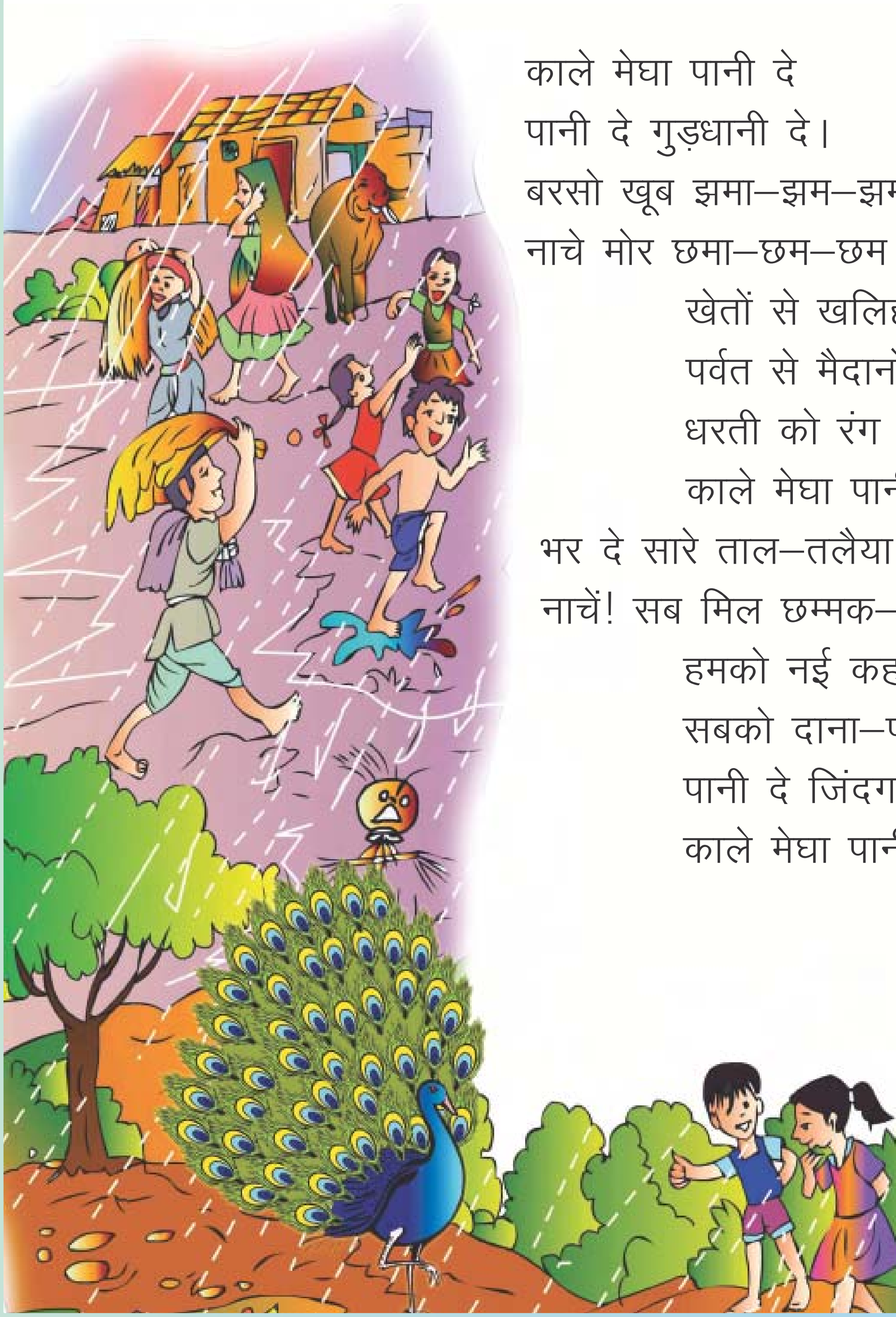

काले मेघा पानी दे
पानी दे गुड़धानी दे।
बरसो खूब झमा–झम–झम
नाचे मोर छमा–छम–छम।।

खेतों से खलिहानों तक
पर्वत से मैदानों तक।
धरती को रंग धानी दे
काले मेघा पानी दे।।

भर दे सारे ताल–तलैया
नाचें! सब मिल छम्मक–छैया।

हमको नई कहानी दे
सबको दाना–पानी दे।
पानी दे जिंदगानी दे।
काले मेघा पानी दे।।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मेघा – बादल

गुड़धानी – गुड़ मिलाकर बनाया गया धान

ताल – तालाब

तलैया – छोटा तालाब

जिंदगानी– जीवन

1. उचित विकल्प भरें, बारिश में कौन क्या करता है ?

(क) मिट्टी में .... नहाती है। (चिड़िया / छतरी)

(ख) .... बिल से निकल जाते हैं। (साँप / कौए)

(ग) मेंढक .... हैं। (छिपते / टर्राते)

(घ) बच्चे .... के घर बनाते हैं। (मिट्टी / गोबर)

2. सोचें और बताएँ

1. बारिश आने पर क्या–क्या होता है ?
2. तुम्हें बारिश में क्या–क्या करना अच्छा लगता है ?

3. कौनसा चित्र किस मौसम से संबंधित है। रेखा खींचकर मिलाओ।

चित्र	मौसम
	गरमी
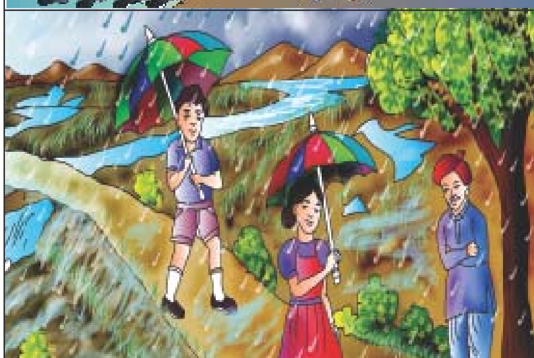	बरसात
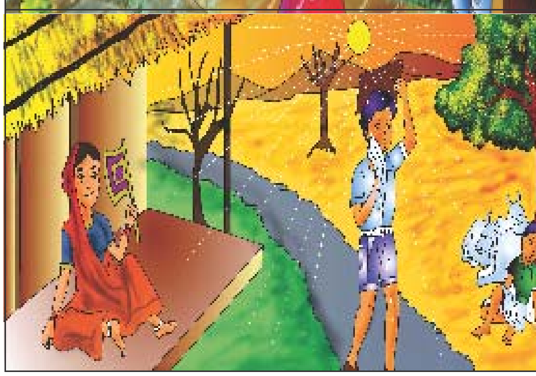	सरदी

4. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

(अ) बारिश के मौसम में कौन नाचता है ?

(क) वाहन (ख) बादल

(ग) मोर (घ) सूरज

(ब) धरती को बरसात क्या देती है ?

(क) दाना   (ख) गुड़धानी

(ग) मिट्टी   (घ) रंगधानी

5. कविता के अनुसार पंक्तियों को पाठ के क्रम में लिखें

खेतों से खलिहानों तक	....
धरती को रंग धानी दे	....
पर्वत से मैदानों तक।	....
काले मेघा पानी दे।।	....

6. आवाज व चित्रों के आधार पर जानवरों के नाम लिखें

चित्र	नाम	कैसे बोलते हैं
	....	पिहू – पिहू
	....	टर्र – टर्र
	....	टाँय – टाँय
	....	काँव – काँव

7. यह भी करें

बारिश के मौसम में जगह–जगह पानी भर जाता है। वर्षा ऋतु की गतिविधियों पर चर्चा करके बच्चों से कागज की नाव बनवाएँ और उसे पानी में तैराने को कहें।

8. इसे भी याद करें

रिमझिम–रिमझिम पानी दे दो।
प्यारे बादल पानी दे दो।।

उमड़–घुमड़कर तुम आ जाओ।
आसमान पर तुम छा जाओ।
फुदक–फुदक कर मेंढक उछले।
नाचें मोर, पपीहे बोलें।

छम–छम, पी–पी, छम–छम, पी–पी

काले बादल पानी दे दो।

प्यारे बादल पानी दे दो।

रिमझिम–रिमझिम, रिमझिम–रिमझिम।।

दादाजी का बाग हरा कर।

नानाजी का खेत हरा कर।

नदियों को तुम जल से भर दो।

झरनों में तुम पानी कर दो।।

कल–कल, छल–छल, कल–कल, छल–छल।

काले बादल पानी दे दो।

प्यारे बादल पानी दे दो।

रिमझिम–रिमझिम, रिमझिम–रिमझिम।।

केवल पढ़ने के लिए

रंगीला बिल्ला

दिल्ली से आया एक बिल्ला
नाम है उसका रंगीला ।
मंद–मंद मुस्कान है उसकी
चश्मा है उसका चमकीला।
पंजाबी कुर्ता है उसका
और दुपट्टा हल्का पीला।

चप्पल उसकी जापानी है
पर्स है उसका गहरा नीला।
भूख लगी है उसको भारी
मचा रहा है, चिल्लम–चिल्ला।
मैं बोली, मेरे प्यारे बिल्लू
मत कर इतना हल्ला–गुल्ला।

5 स्नान

प्रातः काल का समय था। सूर्य अभी निकलने को था। जीजी स्नान करके हँसती–हँसती निकली। उसके छोटे भाई मनु ने उसे देखते ही कहा–जीजी, तुम कितनी अच्छी लग रही हो।

जीजी – लगूँगी ही भैया। रोज स्नान करती हूँ।

मनु – जीजी, स्नान तो मैं भी रोज करता हूँ। दो–तीन बाल्टी पानी अपने ऊपर डाल लेता हूँ।

जीजी – केवल अपने ऊपर पानी डाल लेना ही तो नहाना नहीं है।

मनु – तो जीजी, फिर कैसे नहाना चाहिए ?

जीजी – नहाने के लिए सबसे जरूरी बात तो यह है कि जल स्वच्छ हो। जल स्वच्छ नहीं होगा तो चमड़ी की कई बीमारियाँ हो जाएँगी–जैसे फोड़ा, फुंसी, दाद, खुज़ली आदि।

मनु – तो क्या पोखर, नदी, तालाब, बावड़ी, हैंडपंप और कुएँ के पानी से स्नान नहीं करना चाहिए ?

जीजी – यह तो मैंने नहीं कहा, गाँवों में अधिकतर लोग पोखर, तालाब,

बावड़ी पर नहाते हैं। वहीं कपड़े धोते हैं। पशु भी उसी पानी में बैठे रहते हैं। ऐसे स्थान पर नहीं नहाना चाहिए।

मनु – जीजी, यह तो बताओ कि क्या रोज साबुन लगाकर नहाना जरूरी है ?

जीजी – नहीं, ऐसा नहीं है। अधिक साबुन लगाने से चमड़ी रूखी हो जाती है।

मनु – और किस बात का ध्यान रखें, जीजी।

जीजी – सबसे बड़ी बात तो शरीर की सफाई की है। नहाते समय खूब मल–मलकर नहाना चाहिए। इसके बाद शरीर को मोटे तौलिये से रगड़ कर साफ करना चाहिए।

जीजी – इससे शरीर का मैल साफ हो जाता है। चमड़ी के छिद्र खुल जाते हैं।

मनु – तब तो खेलने और व्यायाम करने के बाद अवश्य स्नान करना चाहिए ?

जीजी – हाँ, मनु उसके बाद तो करना ही चाहिए, लेकिन एकदम नहीं करना चाहिए। पसीना सूखने पर ही नहाना अच्छा होता है।

मनु – जीजी, कभी–कभी हमें नदी, तालाब, बावड़ी पर नहाना पड़ता है। तब किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

जीजी – तब यह ध्यान रखना चाहिए कि पानी अधिक गहरा न हो, स्नान करने वाले को तैरना भी आता हो।

मनु उठने ही वाला था कि जीजी ने उससे कहा– एक बात और सुनते जाओ मनु। यह याद रखना कि स्नान से शरीर ही स्वच्छ नहीं रहता, मन भी प्रसन्न रहता है और हम कभी दुःखी नहीं होते हैं। अतः स्वच्छ शरीर प्रसन्न मन।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वच्छ – साफ

पोखर – छोटा तालाब

छिद्र – छेद

व्यायाम – कसरत

1. पढ़ें और समझें

स्नान, स्वच्छ, फोड़ा–फुंसी, खुजली, दाद, चमड़ी, प्रसन्न

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरें

(स्वच्छ, चमड़ी, साबुन, अच्छी)

1. जल .... नहीं होगा तो .... की कई बीमारियाँ हो जाएँगी।
2. जीजी, तुम कितनी .... लग रही हो।
3. रोज .... लगाकर नहाना चाहिए।

3. नए शब्द बनाएँ

स्वच्छ – स्वच्छता, प्रसन्न – ....

पढ़ – .... चढ़ – ....

4. पाठ में आए उन नए शब्दों को जानिए, जिनमें विसर्ग का प्रयोग हुआ है

प्रातः काल, अतः, दुःख

5. एक शब्द में उत्तर लिखें

1. जीजी के छोटे भाई का क्या नाम था ?

....

2. नहाने के बाद शरीर को किससे रगड़ कर पौंछना चाहिए ?

....

3. नहाने के लिए कैसा जल होना चाहिए ?

....

6. सुंदर लेख लिखें

स्नान से शरीर स्वच्छ एवं मन प्रसन्न रहता है।

7. अपनी अच्छी आदतें

यह भी याद करें

गंदे रहना ठीक नहीं,
साफ रहो जी, साफ रहो।

कमरा, घर और गली–मोहल्ला,
कहीं न हो कचरे का हल्ला।
इनसे–उनसे, सबसे कहो,
साफ रहो जी, साफ रहो।

यदि कहीं हो जरा गंदगी,
हाथ बढ़ा, उठाओ गंदगी।
कूड़ा कहीं पड़ा न हो,
साफ रहो जी, साफ रहो।

6 तिरंगा

यह तिरंगा झंडा अपना, तीन रंग है इसकी शान।
ऊँचा उड़ता रहे गगन में, हमको है इस पर अभिमान।
केसरिया रंग इसकी शोभा, वीरों का उत्साह बढ़ाता।
शांति–मार्ग पर बढ़ते रहना, श्वेत रंग सबको सिखलाता।
खुशहाली का रंग हरा है, मेहनत से खुशहाली आती।
चक्र प्रगति का प्रतीक है, गति ही मंजिल तक ले जाती।
देश का झंडा हमको प्यारा, न्योछावर हैं, इस पर प्राण।
इसकी रक्षा करें हमेशा, आजादी की यह है शान।

निर्देश : राष्ट्रीय ध्वज का महत्त्व समझाएँ। देश की आजादी की घटनाएँ सुनाएँ और वीरता, शांति, सद्भाव आदि मूल्यों के विकास का प्रयास करें।

शब्द–अर्थ

तिरंगा	–	तीन रंग का
उत्साह	–	उमंग
शान	–	मान–मर्यादा
श्वेत	–	सफेद
प्रतीक	–	रूप
प्रगति	–	आगे की ओर बढ़ना

1. पढ़ें और समझें

तिरंगा, झंडा, ऊँचा, उत्साह, चक्र, प्राण, न्योछावर, श्वेत, शांति–मार्ग, प्रगति

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरें

(उत्साह, शांति–मार्ग, रक्षा, गगन)

1. ऊँचा उड़ता रहे .... में।
2. वीरों का .... बढ़ाता।
3. .... पर बढ़ते रहना।
4. इसकी .... करें हमेशा।

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

1. तिरंगे झंडे में कितने रंग होते हैं ?

(क) पाँच (ख) तीन

(ग) चार (घ) छः

2. कविता के अनुसार हमको किस पर अभिमान है ?

(क) घर पर (ख) दोस्तों पर

(ग) तिरंगे पर (घ) विद्यालय पर

4. नीचे दी गई पंक्तियों का सही मिलान करें

(क) केसरिया रंग इसकी शोभा	गति ही मंजिल तक ले जाती।
(ख) चक्र प्रगति का प्रतीक है	आजादी की यह है शान।
(ग) इसकी रक्षा करें हमेशा	हमको है इस पर अभिमान।
(घ) ऊँचा उड़ता रहे गगन में	वीरों का उत्साह बढ़ाता।

5. पढ़ें और लिखें

(क) तिरंगा .... (ख) अभिमान ....

(ग) श्वेत .... (घ) न्योछावर ....

(ङ) उत्साह .... (च) झंडा ....

6. कविता के कुछ शब्द नीचे वर्ग पहेली में छिपे हैं, उन्हें ढूँढकर घेरा बनाएँ— जैसे तिरंगा

ति	प्र	ती	क	अ
रं	ग	ग	न	भि
गा	ति	झं	डा	मा
र	ग	ग	श	न
र	उ	त्	सा	ह

7. सोचें और बताएँ

(क) सफेद रंग क्या सिखलाता है ?

(ख) खुशहाली किससे आती है ?

(ग) हमें झंडे की रक्षा क्यों करनी चाहिए ?

8. पाठ में आए "र" के विभिन्न रूपों को जानिए

रक्षा, मर्यादा, चक्र, प्राण, प्रगति, प्रतीक, प्यारा

9. सुंदर लेख लिखें

तीन रंग का अपना झंडा।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

निर्देश – शिक्षक/शिक्षिका "र" के विभिन्न रूपों की जानकारी बालकों को देवें।

10. अपने अध्यापक की सहायता से दिए गए महापुरुषों के चित्रों को पहचानें तथा उनके नाम लिखें।

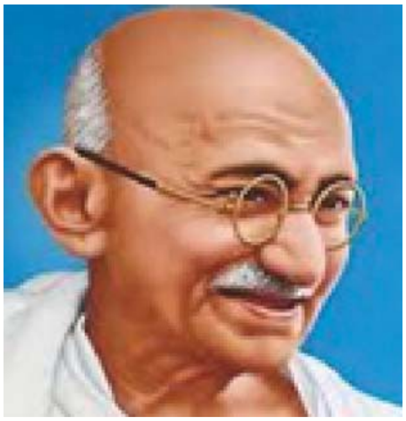

---------------------------------- ----------------------------------

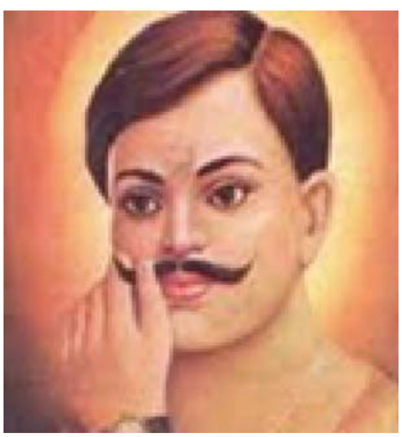

---------------------------------- ----------------------------------

निर्देश – शिक्षक/शिक्षिका चित्रों में दिए गए महापुरुषों के चित्रों की पहचान कराएँ तथा बच्चों को इनके बारे में कुछ जानकारियाँ भी दें।

11. झंडे के चित्र पर पेंसिल घुमाएँ एवं रंग भरें।

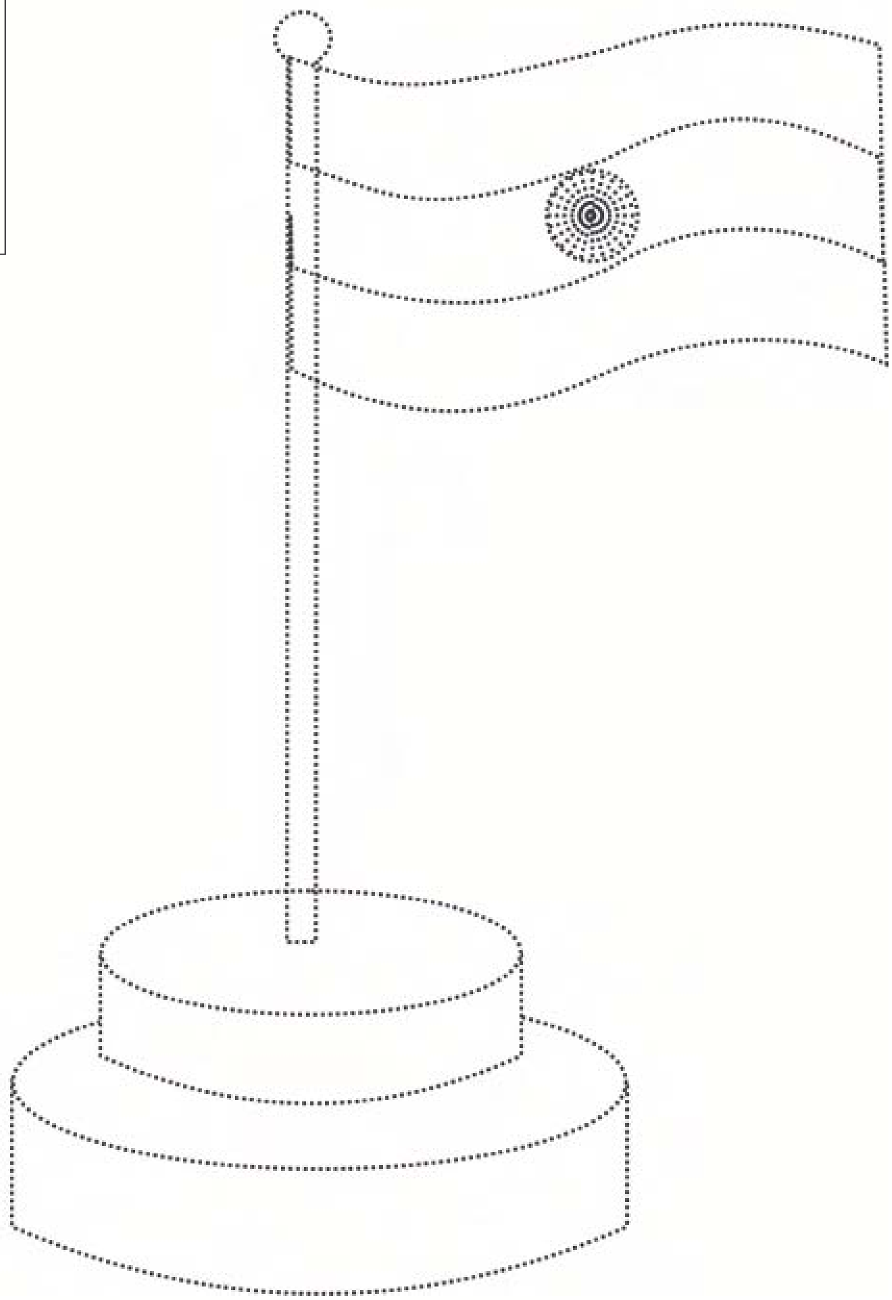

फिरकी बनाओ

सामग्री

1. कोई भी अनुपयोगी कागज/पुरानी पत्र–पत्रिकाओं के पृष्ठ 2. तिनका या कुल्फी की लकड़ी

चरण:

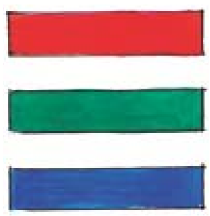

1. कागज की समान नाप की तीन पट्टियाँ लो।

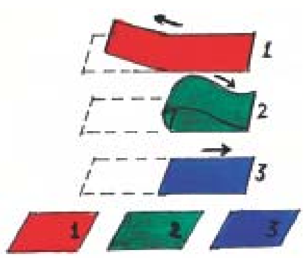

2. तीनों पट्टियों को चित्र में दिखाए अनुसार समान एवं बराबर भागों में मोड़ लो।

3. एक मुड़ी हुई पट्टी के ऊपर दूसरी मुड़ी हुई पट्टी चित्रानुसार जमाओ।

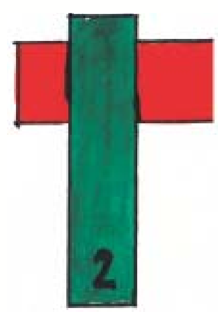

4. चित्र के अनुसार तीनों पट्टियों को गूँथो।

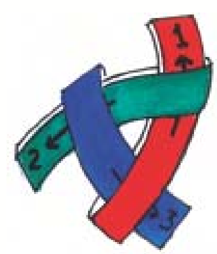

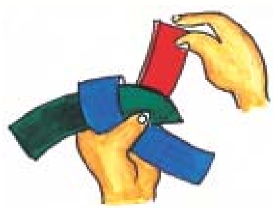

5. तीनों पट्टियों को एक हाथ में पकड़कर दूसरे हाथ से पट्टियों को खींचो।

6. तीनों पट्टियों को एक–एक बार फिर से ऊपर खींचकर एक कोना तैयार करो।

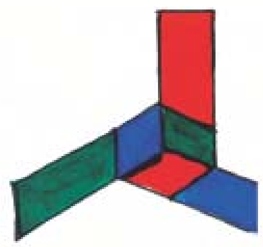

7. यह हो गई फिरकी तैयार।

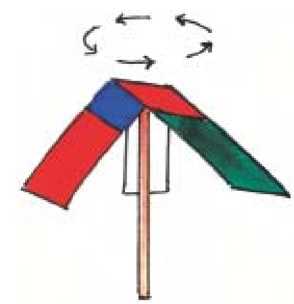

8. इस तैयार फिरकी को लकड़ी के तिनके या कुल्फी की लकड़ी पर टिकाओ। चित्र के अनुसार फिरकी को चलाओ।

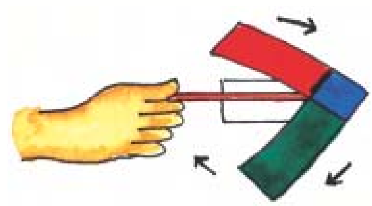

यह भी करें

बड़ों को प्रणाम करें।
रोज सवेरे प्रणाम करें।
हाथ जोड़कर प्रणाम करें।
सिर झुकाकर प्रणाम करें।

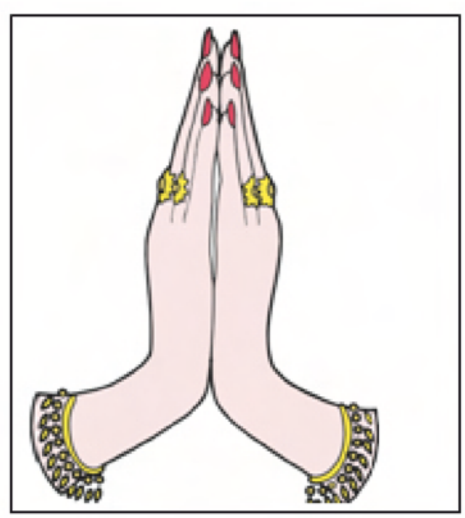

केवल पढ़ने के लिए

अबलक घोड़ी

अबलक घोड़ी लाल लगाम।
तीन लाख है इसके दाम।।
आभूषण भी कई कमाल।
छमछम नाचे सरपट चाल।।
जैसे हुआ ठंड का अंत।
आया झटपट यहाँ बसंत।।
उसके ऊपर एक सवार।
बैठे हर क्षण ऐनक धार।।
और फटाफट चढ़ा किशोर।
साथ घूमने चारों ओर।।
ऋषभ श्रवण हैं ज्ञानी मित्र।
यहाँ—वहाँ के लेते चित्र।।

निर्देश : इस कविता में हिंदी वर्णमाला के सभी स्वर, व्यंजन तथा प्रमुख संयुक्ताक्षर समेकित है। कविता बुलवाते समय समझाते जाएँ।

7 रक्षाबंधन

हमारे राज्य में कई त्योहार मनाए जाते हैं। इनमें होली, दिवाली, दशहरा, ईद, बैसाखी, क्रिसमस, रक्षाबंधन आदि मुख्य हैं। रक्षाबंधन को राखी का त्योहार भी कहते हैं। यह श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। राखी भाई–बहन का त्योहार है। इसमें एक दूसरे की रक्षा करने की भावना छिपी रहती है।

इस त्योहार के कुछ दिन पहले से ही कई लोग राखियाँ बनाने के काम में लग जाते हैं। रेशम के रंग–बिरंगे धागों, मोतियों, सितारों और गोटे से तरह–तरह की सुंदर राखियाँ बनाते हैं। बाजार में राखी और मिठाई की दुकानें सजने लगती हैं। लोग राखियाँ और मिठाइयाँ खरीदते हैं।

राखी के मौके पर सुंदर–सुंदर राखियाँ लेकर बहनें अपने भाई के घर जाती हैं। उनके तिलक लगाती हैं। मिठाई खिलाती हैं। कलाई पर राखी बाँधकर, उनके सुखी जीवन की कामना करती हैं। राखी बँधवाकर भाई अपनी बहन को उपहार देता है।

कहा जाता है कि चित्तौड़ पर गुजरात के शासक बहादुरशाह ने आक्रमण किया। उस समय चित्तौड़ की रक्षा का भार रानी कर्मवती पर था। रानी के पास सेना कम थी। उसने दिल्ली के शासक हुमायूँ से सहायता माँगने की सोची। कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजी। हुमायूँ उसकी रक्षा के लिए अपनी सेना लेकर आया था। समाज में राखी बँधवाकर भाई–बहन बनाने की भी परंपरा रही है। राखी भाई–बहनों के स्नेह का त्योहार है।

भाई–बहन का पावन प्यार, रक्षाबंधन का त्योहार

निर्देश : रानी कर्मवती की कहानी विस्तार से बताएँ एवं रक्षाबंधन के महत्त्व को समझाएँ। अपने परिवेश में मनाए जाने वाले त्योहारों पर बातचीत करें। यथा– त्योहार मनाने का तरीकों, खान–पान, पहनावा, मनाने का कारण आदि।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मुख्य	–	खास
माह	–	महीना
कामना	–	इच्छा
सहायता	–	मदद
आक्रमण	–	हमला
परंपरा	–	रीति–रिवाज
शासक	–	शासन करने वाला

1. पढ़ें और समझें

त्योहार, रक्षाबंधन, श्रावण, हुमायूँ, कर्मवती, संबंध, मुख्य, पूर्णिमा।

2. सोचें और बताएँ

1. हमारे यहाँ कौन–कौन से त्योहार मनाए जाते हैं ?
2. रक्षाबंधन त्योहार को और क्या कहते हैं ?
3. बहनें किसे राखी बाँधती है ?

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

1. रक्षा बंधन का त्योहार कब मनाया जाता है ?

   (क) श्रावण माह की पूर्णिमा

   (ख) चैत्र माह की पूर्णिमा

   (ग) आषाढ़ माह की पूर्णिमा

   (घ) बैसाख माह की पूर्णिमा

2. राखी के दिन बहनें राखी लेकर कहाँ जाती है ?

   (क) मंदिर (ख) भाई के घर

   (ग) स्कूल (घ) ससुराल

4. संबंधों को मिलाएँ

मामा	काकी
चाचा	दादी
काका	मामी
दादा	चाची

5. नए शब्द बनाएँ

राखी	राखियाँ	गाड़ी	....
मिठाई	....	थाली	....

6. पढ़ें और लिखें

(क) ईद .... (ख) श्रावण ....

(ग) पूर्णिमा .... (घ) त्योहार ....

(ङ) आक्रमण .... (च) परंपरा ....

7. एक शब्द में उत्तर लिखें

(क) रक्षाबंधन का त्योहार किस दिन मनाया जाता है ?

(ख) राखी के दिन बहिनें क्या करती हैं ?

(ग) कर्मवती ने किसको राखी भेजी थी ?

8. सुन्दर लेख लिखें

भाई–बहन का पावन प्यार, रक्षाबंधन का त्योहार।

....

....

....

....

....

....

9. अपनी पसंद की राखी बनाएँ और 'मेरा संकलन' में लगाएँ।

कार्टून

निर्देश :– शिक्षक / शिक्षिका प्रस्तुत कार्टून जैसे ही अन्य कार्टून्स बच्चों को दिखाकर चर्चा करें।

8 शीला का साहस

चमनपुर गाँव पहाड़ियों के बीच बसा हुआ था। गाँव से थोड़ी दूर पाठशाला थी। पाठशाला के रास्ते में घने पेड़ और झाड़ियाँ थीं। पास ही नाला बहता था। नाला पार करके शाला जाना पड़ता था। छोटे बच्चे अकेले आते–जाते डरते थे। इसलिए वे बड़े बच्चों के साथ ही आते–जाते थे।

शीला उसी शाला में पाँचवीं कक्षा में पढ़ती थी। वह अपने मोहल्ले के बच्चों को साथ लाती और ले जाती थी।

बरसात के दिन थे। शीला बच्चों को लेकर शाला जा रही थी। बच्चे आगे–पीछे उछलते–कूदते चल रहे थे।

शीला ने देखा, आज नाले में बहाव तेज है। उसने बच्चों को एक–दूसरे के हाथ पकड़वाए और नाला पार करवाने लगी। अचानक मनीष का हाथ छूट गया। वह गिर पड़ा और पानी के साथ बहने लगा।

शीला घबराई। उसने तुरंत अपना बस्ता दूसरे को थमाया और तेजी से तैरने लगी। उसकी साँस फूल गई लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी।

वह मनीष के पास पहुँची और उसका हाथ पकड़ लिया। शीला उसे खींचकर किनारे लाई। वह थक कर गिर पड़ी। इतने में कुछ बच्चे और गुरुजी दौड़ते हुए आ गए। शीला के इस साहस की बात चारों तरफ फैल गई। सभी ने उसकी प्रशंसा की।

साहस से जो करता काम, जग में होता उसका नाम।

निर्देश : शिक्षक बच्चों में साहस एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास करें, साथ ही इससे मिलती जुलती साहस दिखाने वाली कहानी सुनाएँ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मोहल्ला – गली
शाला – विद्यालय
प्रशंसा – तारीफ

1. पढ़ें और समझें

बच्चों, मोहल्ला, प्रशंसा, झाडियाँ, पाँचवीं, बस्ता

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरें

(उछलते–कूदते, पाँचवीं, शीला, शाला, पानी)

1. .... बच्चों को लेकर .... जा रही थी।
2. शीला .... कक्षा में पढ़ती थी।
3. बच्चे आगे–पीछे .... चल रहे थे।
4. वह गिर पड़ा और .... के साथ बहने लगा।

3. उल्टे अर्थ वाले शब्द लिखें

दूर– पास,	छोटे – ....
आना–	दिन – ....

4. एक शब्द में उत्तर लिखें

- पाठशाला के रास्ते में क्या बहता था ?
- मोहल्ले के बच्चों को शाला तक कौन अपने साथ लाती थी
- पानी में कौन गिर पड़ा था ?

5. सुंदर लेख लिखें

साहस से जो करता काम, जग में होता उसका नाम।

....

....

....

केवल पढ़ने के लिए

साफ हाथ में है दम

सबसे पहले होता है हाथ गीला,
फिर हाथ पे नाचे साबुन रंगीला।

हाथ से होता है फिर हाथ का साथ
फिर घूम के आगे पीछे साबुन से खेले हाथ।

खेलो अब उँगलियों में घुसकर,
फिर चलाओ हथेलियों पर नाखूनों का चक्कर।

हाथ करें फिर पानी में छम–छम,
क्योंकि, साफ हाथ में ही है दम।
खाने से पहले शौच के बाद....
हम सब धोएँ साबुन से हाथ।

खाने से पहले शौच के बाद.... हम सब धोएँ साबुन से हाथ

9 सूरज का रूमाल

एक बार सूरज को जुकाम हो गया। हुआ यूँ कि एक दिन बारिश हो रही थी और सूरज बिना गमबूट (Gumboot) पहने ही बाहर निकल पड़ा। पानी भरे गड्ढों में वह छप–छप करता चलता गया, जिससे उसके पैर काफी भीग गए। वापस लौट आने के बजाय वह आगे बढ़ता ही गया।

थोड़ी ही देर में उसके कपड़े भी भीग गए और फिर भी वह नहीं लौटा। वह तो आगे–ही–आगे झरनों और पहाड़ियों पर से उछलता–कूदता हरे–भरे मैदानों को पार करता चला गया। धरती ने उसे गरम पानी की बोतल दी और रज़ाई ओढ़ाकर बिस्तर में सुला दिया। इसका कोई फ़ायदा नहीं हुआ। वह सपने में भी छींकता ही रहा।

जब इन सबसे भी आराम नहीं आया तो धरती ने अपनी बहन फूलरानी को बुलाया। फूलरानी ने गुलाब, सूरजमुखी के फूल, बटन फूल, नीले घंटी फूल और तरह–तरह के फूलों की मुस्कान ली। उसमें तुलसी और जड़ी–बूटी मिलाकर दवा बनाई। दवा सूरज को गरम–गरम पिला दी।

फूलरानी ने सूरज के लिए एक रूमाल बनाया। उसमें फूलरानी ने नींद में सिर डुलाते बैंगनी रंग के बनफ़शा के फूलों की सुंदरता डाली। आसमान के नीले रंग से हलका नीला रंग, गुनगुनाते झरनों के किनारे उगी लम्बी घास का हरा रंग, बाँस और मधुमक्खी का पीला रंग, सागर पर छिटका सूर्यास्त का नारंगी रंग और गरमियों में जंगलों में फलने वाले बेरों का लाल रंग मिलाया। ये सतरंगी रूमाल फूलरानी ने सूरज को दे दिया।

जल्दी ही सूरज का जुकाम ठीक होने लगा और सुबह सूरज फूलरानी का दिया सतरंगी रूमाल लेकर बाहर आया, शायद ज़रूरत पड़ जाए।

निर्देश :– चित्रों पर बातचीत करते हुए कहानी सुनाएँ। क्या, क्यों के सवाल पूछें जैसे – इस चित्र में क्या–क्या दिखाई दे रहा है। सूरज गमबूट पहने बिना बाहर क्यों निकला होगा? इत्यादि।

रोशनी में रूमाल चमकने लगा। एक नन्हीं लड़की जो लगातार बारिश से ऊब गई थी बोली, ''यह तो इन्द्रधनुष है, जिसने बरखा रानी को बाँध रखा है।''मगर हमारे लिए यह तो सूरज का सतरंगी रूमाल है।

तरुण चेरियन

अभ्यास—कार्य

शब्द—अर्थ

सतरंगी — सात रंगों का

बनफशा — एक प्रकार का फूल

गम बूट — बारिश में पहने जाने वाले जूते

सूर्यास्त — सूर्य का पश्चिम दिशा में डूबना

इंद्रधनुष — बारिश के बाद सूर्य की किरणों से आसमान में धनुष के आकार की बनने वाली सात रंगों की एक विशेष आकृति

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

1. सूरज बिना पहने ही बाहर निकल पड़ा—

(क) पेंट (ख) गमबूट

(ग) कमीज़ (घ) टोपी ( )

2. सूरज सपने में भी —

(क) डरता रहा (ख) भीगता रहा

(ग) नहाता रहा (घ) छींकता रहा ( )

2. सही वाक्य के आगे सही (✓) व गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाइए

1. इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं। ( )
2. चन्द्रमा को जुकाम हो गया। ( )
3. धरती की बहन का नाम फूलवती था। ( )
4. सूर्यास्त के समय सूरज का रंग नारंगी होता है। ( )
5. इंद्रधनुष को सूरज का सतरंगी रूमाल कहा गया है। ( )

3. सोचें और बताएँ

1. रूमाल के क्या–क्या उपयोग होते हैं ?
2. तुमको फूलरानी मिल जाए तो तुम उससे क्या–क्या माँगोगे ?
3. सर्दी से बचने के लिए तुम किन–किन चीजों का उपयोग करते हो ?

4. अधूरे शब्दों को पूरा करें।

1. सत.................गी,
2. बन.................शा
3 ....द्र धनुष,
4. सू.................स्त,
5. पहाड़ि.................

5. उत्तर लिखें

1. जब सूरज को आराम नहीं आया तो धरती ने क्या किया ?

....

2. फूलरानी ने तरह–तरह के फूलों से क्या लिया ?

....

3. फूलरानी ने तुलसी और जड़ी–बूटी से क्या किया ?

....

4. इंद्रधनुष ने किसको बाँध रखा है ?

....

5. फूलरानी ने सूरज के लिए बनाए रुमाल में कौन–कौनसे रंग मिलाए ?

....

6. समान लय वाले दो शब्द लिखें

- पानी नानी ....
- रात सात ....
- घर हर ....
- ताल जाल ....
- नीला गीला ....

7. चित्रों में भरे रंगों के हिंदी में नाम लिखें।

(Purple)	(Blue)	(Sky Blue)	(Green)
-----------	-----------	-----------	-----------

(Yellow)	(Orange)	(Red)
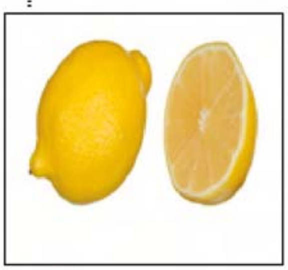	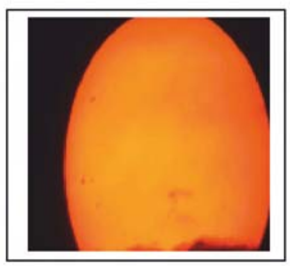	
-----------	-----------	-----------

8. इन रंगों के पहले अक्षर को लेकर क्रम से लिखें।

....

....

(रंगों के नाम लिखवाने में शिक्षक बच्चों की मदद करें।)

9. आओ, इन्हें भी बोलें

- यह वृक्ष है बड़ा विशाल।
- ऋतु आए पकते हैं फल।
- मोटूराम तेज–तेज खर्राटें ले रहा था।
- उसका कुरता चर्र से फट गया।
- प्रगति–पथ पर बढ़ें हम।
- प्राण देश हित वारें हम।

समझें

व + ऋ =वृ, जैसे – वृक्ष, वृक

क + ऋ =कृ, जैसे – कृपा, कृति

र् = ‘ र्’, जैसे – फुर्र, खर्राटा, सर्राटा, घर्राटा

र् = ‘ ्र ’ , जैसे – प्रति, प्रधान, प्रमुख, क्रम

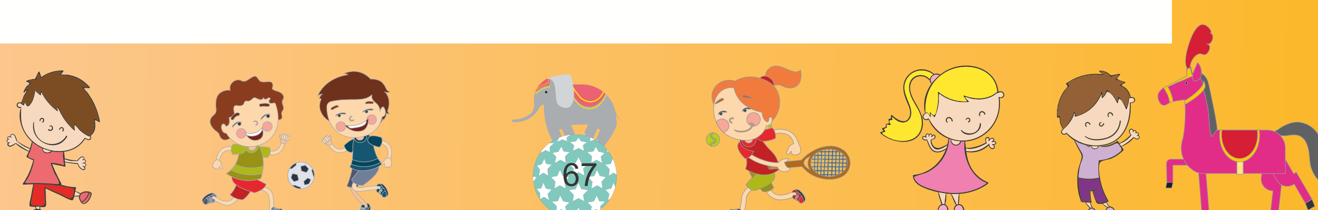

लोकगीत गुनगुनाएँ

काळो जी काळो काँई करो सहेल्याँ ए

काळा राणी राणादे रा केस

काळो सूरज जी रो घोड़लो सहेल्याँ ए

जागा जागा कस्यपजी सा पूत... ।

उगणतो उजास वरणो,

आंतमणो सिंदूर वरणो,

गायां रा गुवाळ चाल्या,

पंछीड़ा मारग चाल्या,

नेम धरम सब साथ, सहेल्याँ ए

जागा जागा कस्यपजी रा पूत... ।

केवल पढ़ने के लिए

बूझो तो जानें

हमने देखा, एक बीमार,
कपड़े पहने, सौ हज़ार।

....

दो आँखों पर, उनका वास,
दो कानों पर, खड़े जनाब।

....

फल, फूल और मिठाई,
तीनों में हूँ मैं,
बूझो बच्चो, कौन हूँ मैं ?

....

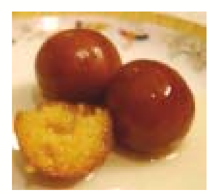

प्याज, चश्मा, गुलाबजामुन।

10

रेल का खेल

आओ–आओ खेलें खेल।
छुक–छुककर बन जाएँ रेल।।

तू तो इंजन बन जा कालू।
गार्ड बनेगा लल्ला बालू।।

चाहे जितनी भी हो दूरी।
टिकट खरीदो बहुत जरूरी।।

वरना टी–टी देगा ठेल।
छुक–छुक कर बन जाएँ रेल।।

पीछे डिब्बे आगे इंजन।
जिनमें हैं, महमूद, निरंजन।।

जॉर्ज, पदमजी, किट्‌टी, लीला।
रेखा, सिमरनकौर, जमीला।।

भीड़–भड़क्का धक्कमपेल।
छुक–छुक कर बन जाएँ रेल।।

पटरी पर तेजी से दौड़े।
बड़े–बड़े नगरों को जोड़े।।

कार मोटरें पीछे छोड़े।
पकड़ न पाए हाथी घोड़े।।

और ऊँट के पड़ी नकेल।
छुक–छुक कर बन जाएँ रेल।।

पटरी–पटरी दौड़ी आती।
रोज मुसाफिर भरकर लाती।।

सिगनल का यह आदर पाती।
टिकट जहाँ का हो, पहुँचाती।।

अपनों से करवाती मेल।
आओ–आओ खेलें खेल।।

छुक–छुककर बन जाएँ रेल।
आओ–आओ खेलें खेल।।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

गार्ड	–	सुरक्षा प्रहरी
टी. टी.	–	टिकट चेक करने वाला
नगर	–	शहर
मुसाफिर	–	यात्री
सिगनल	–	संकेतक
नकेल	–	ऊँट के नाक की डोरी,
मेल	–	मिलन

1. सही वाक्य के आगे सही (✓) व गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाएँ

1. रेलगाड़ी में इंजन सबसे आगे होता है। ( )
2. रेल में यात्रा के लिए टिकट लेना जरूरी है। ( )
3. रेलगाड़ी पटरी पर नहीं चलती है। ( )
4. सिगनल देखकर ही रेल चलती या रुकती है। ( )

2. समझें और लिखें

(गार्ड, बन जाएं, ठेल, नकेल, धक्कमपेल, इंजन)

1. तू तो .... बनजा कालू .... बनेगा लल्ला बालू।

2. वरना टी. टी. देगा ....,छुक–छुककर .... रेल।

3. भीड़–भड़क्का .... ।

4. और ऊँट के पड़ी .... ।

3. इन शब्दों को जानें

गार्ड, टीटी, टिकट, सिगनल

4. इन शब्दों की सहायता से नीचे दिए खाली स्थान को भरें

(स्कूल, बेग, बस, हैण्डपंप, स्कूलड्रेस)

1. आप .... लेकर .... जाते हैं। .... आपको लेने .... आती है। सभी ....पहने होते हैं। वहाँ पानी के लिए .... है।

5. सुंदर लेख लिखें

छुक–छुककर बन जाएँ रेल।

....

....

....

....

6. दी गई आकृति में बिंदु मिलाएँ व रंग भरें।

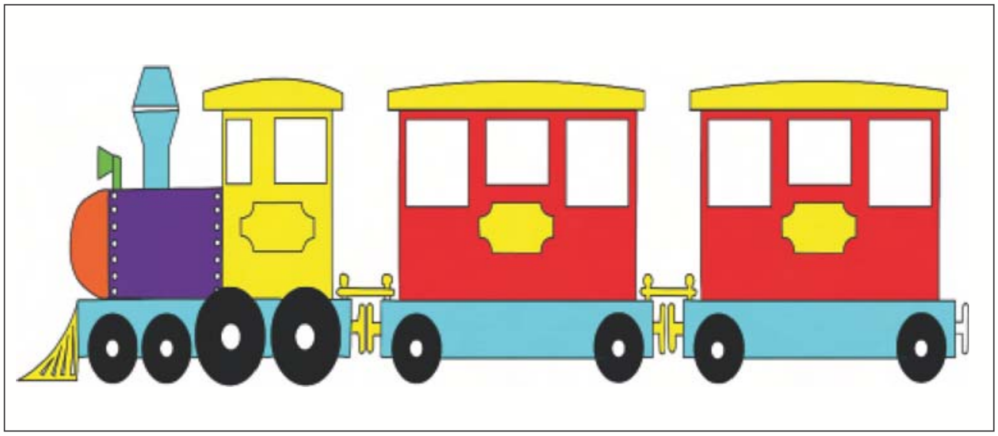

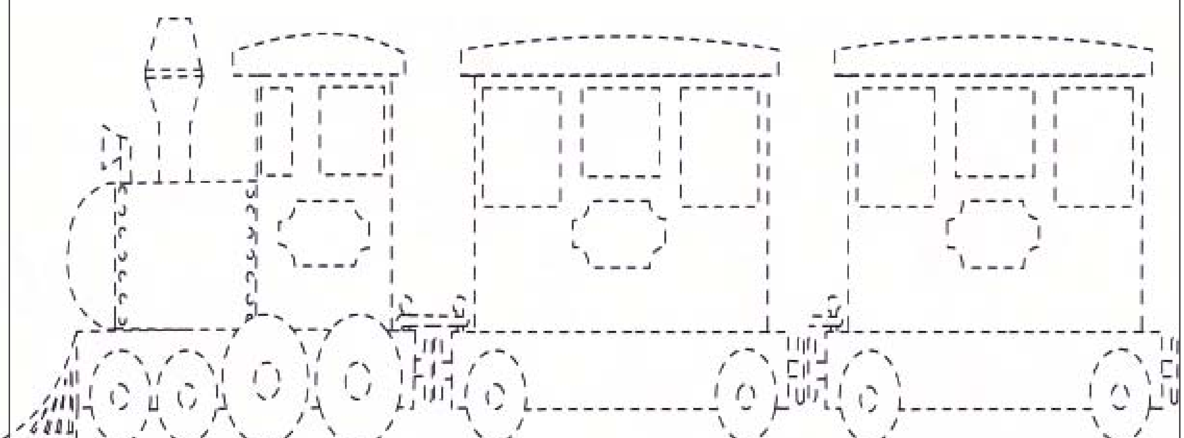

11

शेर और चूहा

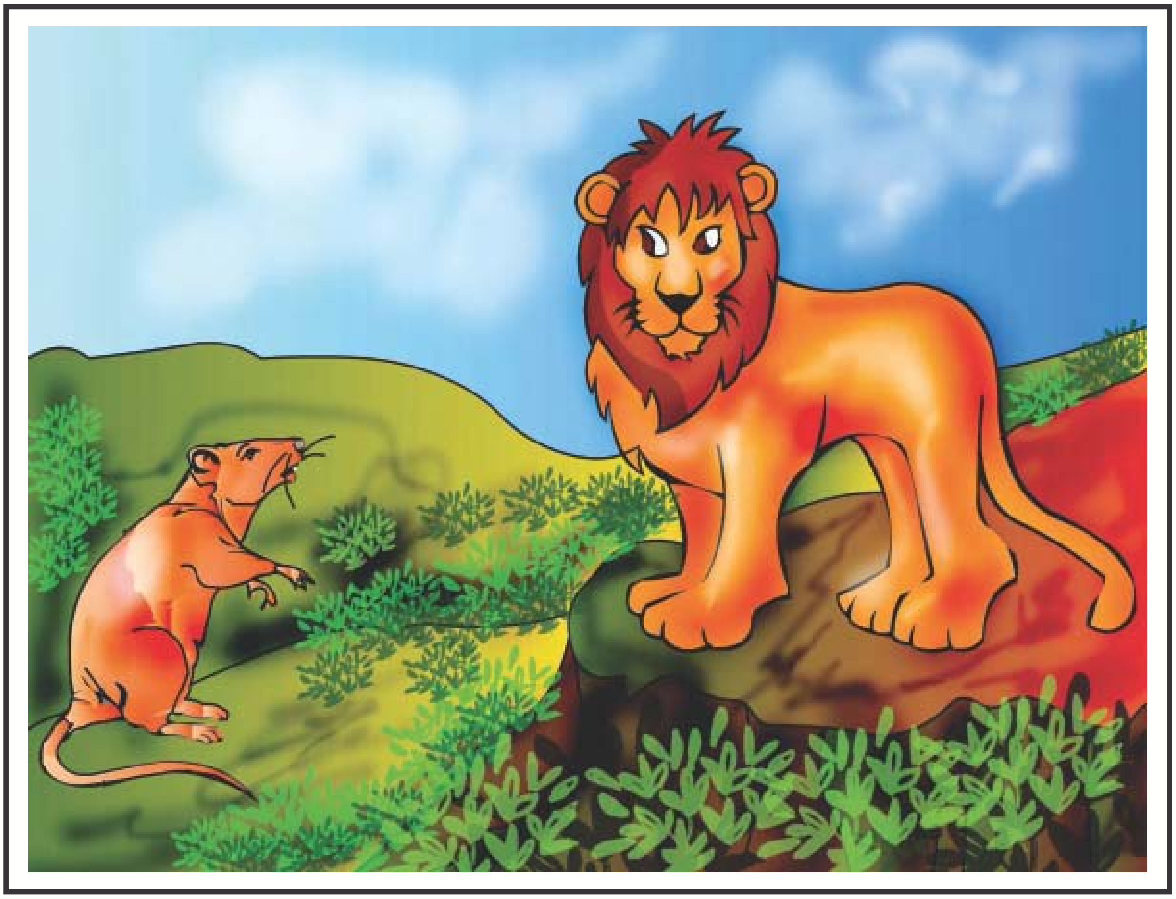

एक शेर अपनी गुफा में सो रहा था। एक चूहा आया और शेर के शरीर पर चढ़कर फुदकने लगा। शेर जाग उठा और उसने चूहे को पकड़ लिया। चूहा रोने लगा।

चूहे ने गिड़गिड़ाते हुए शेर से कहा—अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं भी एक दिन तुम्हारे काम आऊँगा।

शेर यह सुनकर हँस पड़ा। सोचने लगा कि भला चूहा उसके किस

काम आ सकता है! फिर भी, शेर ने चूहे को छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद शिकारियों ने शेर को पकड़ लिया और उसे जाल से बाँध दिया। चूहे ने शेर को दहाड़ते सुना तो वह भागते हुए वहाँ पहुँचा। चूहे ने अपने दाँतों से जाल को काटकर शेर को आजाद कर दिया।

इस तरह चूहे ने शेर की जान बचा ली। फिर चूहा और शेर दोस्त बन गए।

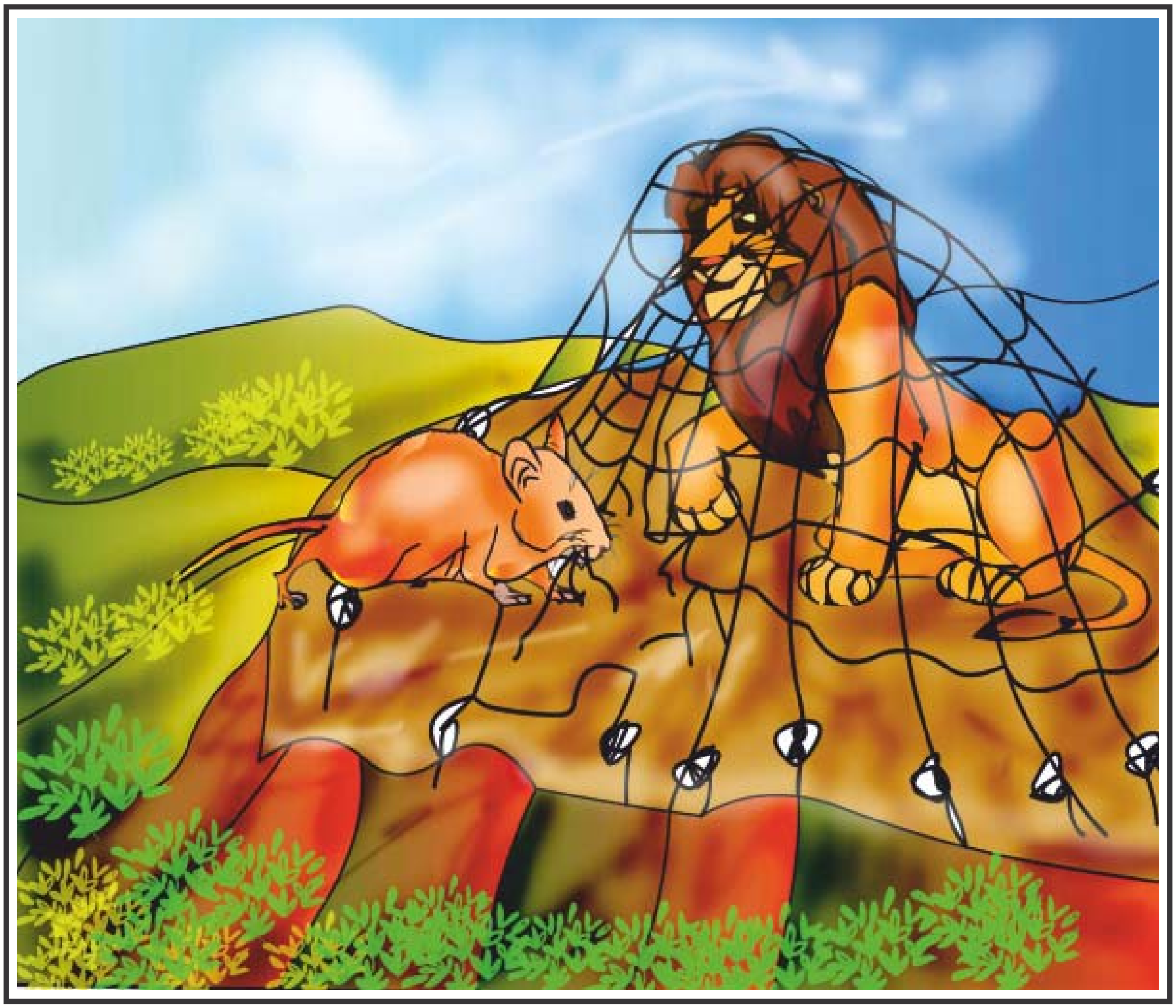

कोई छोटा नहीं होता। मौका पड़ने पर छोटे भी बड़ा काम कर जाते हैं।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

गुफा – खोह, माँद

शिकारी – शिकार करने वाला

जाल – जानवर को पकड़ने का साधन

दोस्त – मित्र

दहाड़ना – चिल्लाना

1. पढ़ें और समझें

फुदकना, गिड़गिड़ाना, बाँधना, पहाड़, दोस्त

2. रिक्त स्थान भरें

(जाल , शेर , फुदकने ,दाँत , चूहा)

1. चूहा शेर के शरीर पर चढ़कर.................................... लगा।
2. चूहे ने गिड़गिड़ाते हुए ....से कहा।
3. भला .... उसके किस काम आ सकता है।
4. चूहे ने ....से ....को काटकर शेर को आजाद कर दिया।

3. सही वाक्य के आगे सही (✓) व गलत वाक्य के आगे गलत (×) का निशान लगाएँ

1. शिकारियों ने शेर को पकड़ लिया। ( )
2. शेर अपनी गुफा में सो रहा था। ( )
3. चूहा और शेर दोस्त बन गए। ( )

4. एक शब्द में उत्तर दीजिए

1. चूहे ने जाल को किससे काटा ?

....

2. चूहे ने किसकी जान बचाई ?

....

3. दोस्ती किस–किसके के बीच हुई ?

....

5. नीचे दिए गए शब्द समूह में से जो शब्द उस वर्ग का नहीं है, उस पर घेरा ○ बनाएँ

(क) चीता, भालू, शेर, गाय
(ख) रतन, हाथ, पैर, दाँत
(ग) भाई, बहन, शेर, माता
(घ) केला, कप, आम, सेव

6. नीचे लिखे गए अवतरण को पढ़कर उसमें आए अल्पविराम, पूर्णविराम एवं प्रश्नवाचक चिह्नों पर गोला लगाइए।

चूहे नें गिड़गिड़ाते हुए शेर से कहा—अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो, मैं भी एक दिन तुम्हारे काम आऊँगा। शेर यह सुनकर हँस पड़ा। शेर ने चूहे से कहा—भला तुम मेरे किस काम आ सकते हो? फिर भी शेर ने चूहे को छोड़ दिया।

7. सुंदर लेख लिखें

शिकारियों ने शेर को पकड़कर बाँध दिया।

....

....

....

....

....

8. जैसे आऊँगा से आऊँगी बना। इसी तरह आप भी नीचे दिए शब्दों से नए शब्द बनाएँ

खाऊँगा / ....

चलूँगा / ....

नाचूँगा / ....

करूँगा / ....

9. बताइए, इन्हें तुम्हारी भाषा में क्या कहते हैं ?

....

....

10. दिए गए चित्र पर पेंसिल घुमाएँ व रंग भरें।

12 बबलू बदल गया

"माँ देर हो रही है। कपड़े पहनाओ। देखो, आलोक तैयार होकर आ गया है।" बबलू जोर से बोला। बबलू की माँ रसोईघर में खाना बना रही थी। उसकी आवाज सुनकर जल्दी से आई। उसे कपड़े पहनाए। मोजे पहनाए और जूते ढूँढने लगी। इतने में रसोईघर से सब्जी जलने की गंध आने लगी। "बबलू तुम जूते ढूँढो, मैं अभी आती हूँ।" कहती हुई माँ तेजी से रसोईघर में गई। उसने देखा, सारी सब्जी जल चुकी है। वह सोचने लगी, बबलू को रोटी के साथ क्या रखूँगी ?

बहुत देर से बबलू को एक जूता नहीं मिल रहा था। शाला की बस भी आने वाली थी। वह जोर से चिल्लाया, "माँ एक जूता नहीं मिल रहा।" आलोक भी ढूँढने लगा। जूता मेज के नीचे पड़ा मिला। माँ ने कहा, "तुम्हें कई बार कहा कि अपना सामान, जूते, बस्ता व कपड़े तय जगह पर रखा करो। इधर–उधर रखने से सुबह–सुबह परेशानी होती है। अब देखो, मैं तुम्हें तैयार करने इधर आई और उधर सब्जी जल गई। अभी रोटी भी नहीं बनी है। आज तुम खाना नहीं ले जा सकोगे। अब तुम शाला जाओ, नहीं तो बस निकल जाएगी।"

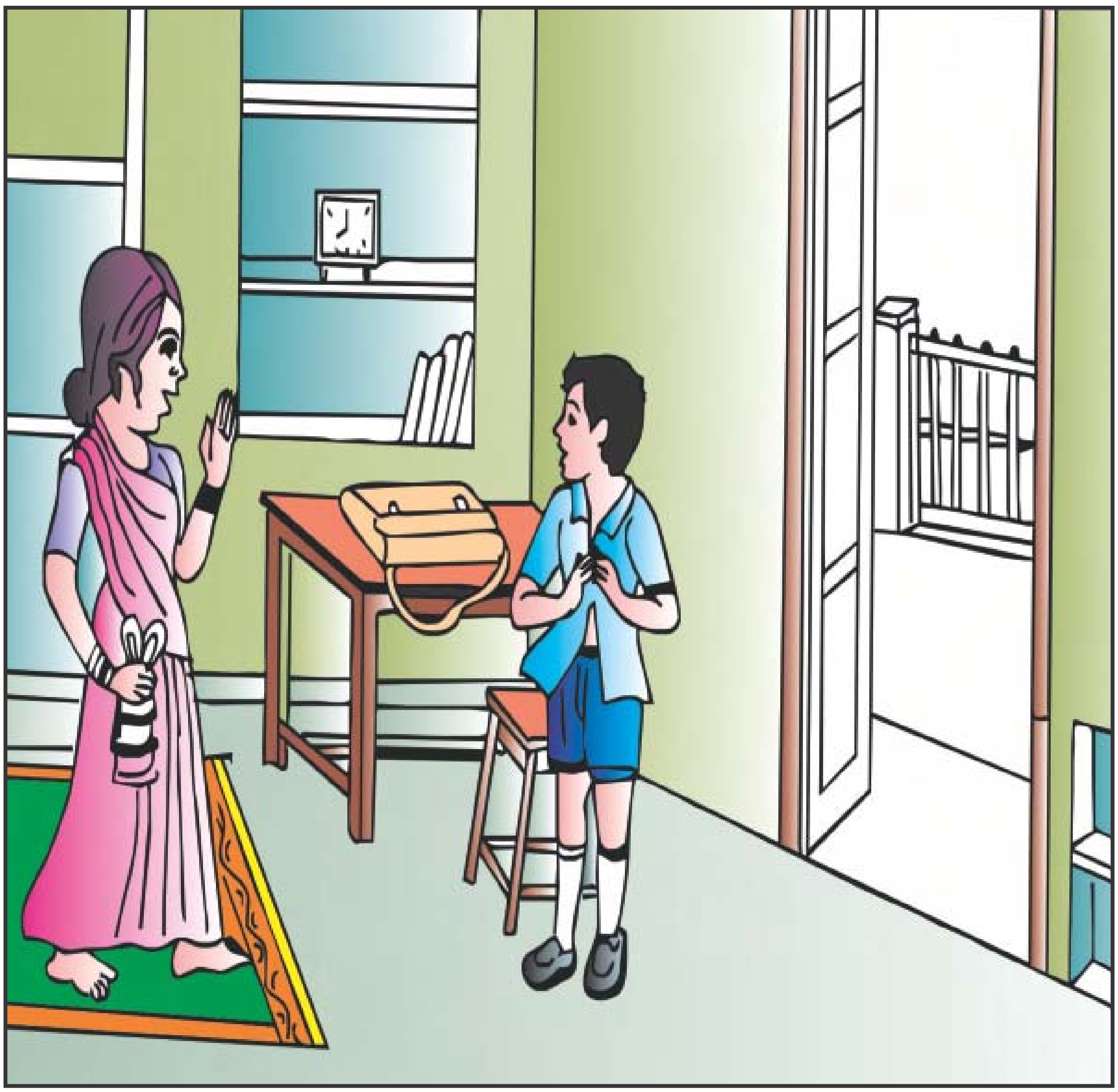

बबलू और आलोक चौराहे पर गए। उनकी बस तो निकल गई। दोनों को पैदल जाना पड़ा। शाला देर से पहुँचे। पढ़ाई शुरू हो गई थी। दोनों झिझकते हुए कक्षा में गए।

"आज फिर देर से आए हो, आज क्या हुआ ?" गुरुजी ने पूछा। बबलू चुप रहा। आलोक ने सारी बात बताई।

गुरुजी बबलू को समझाने लगे, "तुम्हें अपना सामान सही जगह पर रखना चाहिए। सामान सही जगह पर रखने से ढूँढना नहीं पड़ता। अपना काम खुद करना सीखो। तैयार भी तुम्हें ही होना चाहिए।" गुरुजी की बातें सुनकर बबलू ने निश्चय कर लिया कि आज से वह अपना काम स्वयं ही करेगा।

खाने की छुट्टी हुई। बबलू का खाना नहीं आया। आलोक ने उसको खाना खिलाया।

शाम को छुट्टी होने पर बबलू घर आया। आज उसने अपना बस्ता, कपड़े, जूते सब ठीक जगह पर रखे। माँ ने नाश्ता लगा दिया था। उसने हाथ धोए और नाश्ता करने बैठा।

कपड़े, जूते, बस्ता ठीक जगह रखने के लिए माँ उसके कमरे में गई। पर यह क्या ? आज सारा सामान जमा हुआ था। वह बहुत खुश हुई। उसने बबलू को शाबाशी दी और कहा, "वाह! बबलू आज तो तुम बिल्कुल बदल गए हो।"

अगले दिन आलोक हमेशा की तरह बबलू के यहाँ पहुँचा। बबलू पहले से ही तैयार था। यह देख आलोक बहुत खुश हुआ। दोनों शाला के लिए चल पड़े।

निर्देश : शिक्षक विद्यार्थियों में अपना सामान संभाल कर व्यवस्थित रखने की आदत का विकास करें। शाला या कक्षा में जूते, टिफिन व अन्य सामान निश्चित जगह पर रखना सिखाएँ।

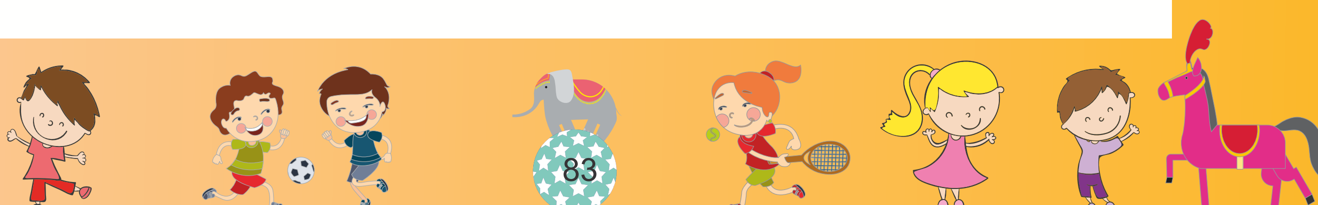

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

गंध – बास

नाश्ता – कलेवा

संभाल – देख–रेख

झिझकना – संकोच करना

चौराहा – वह स्थान जहाँ चारों तरफ से आकर रास्ते मिलते हैं

1. पढ़ें और लिखें

सब्जी, रसोईघर, ढूँढ़ना, चिल्लाना, बस्ता, स्वयं, शाबाश, संभालना

2. पढ़ें और समझें

(दो छोटे वाक्यों को 'और' से जोड़कर बोलना व लिखना सिखाएँ)

1. माँ ने मोजे पहनाए	और	जूते ढूँढने लगी।
2. आलोक		बबलू पैदल ही गए।
3. बबलू ने हाथ धोए		नाश्ता करने बैठा।
4. छुट्टी हुई		वह घर आया।

3. सही शब्द लिखकर वाक्य पूरा करें

1. बबलू .... ढूँढने लगा। (जूता/बस्ता)
2. बबलू .... लेकर नहीं जा सका। (खाना/जूता)

3. गुरुजी ने अपना सामान सही जगह पर रखने की शिक्षा ....को दी।   (आलोक / बबलू)

4. बबलू ने .... धोकर नाश्ता किया। (हाथ / पैर)

4. नए शब्द बनाएँ

कपड़ा – कपड़े	कमरा ....
जूता	बस्ता ....
रखा	पहुँचा ....
बिखरा	बैठा ....

5. एक शब्द में उत्तर लिखें

1. बबलू को खाना किसने खिलाया ?

....

2. गुरुजी ने बबलू को क्या समझाया ?

....

3. रसोईघर से किसकी गंध आने लगी थी ?

....

6. सुंदर लेख लिखें

बबलू आज तो तुम बिल्कुल बदल गए हो।

....

....

....

आओ, खेलें खेल

कान पकड़ लो, नाक पकड़ लो

पूर्व तैयारी : गोला बनाना

निर्देशन :

बनाए गए गोले में बच्चों को खड़ा करके अथवा बैठाकर शिक्षिका स्वयं बीच में खड़ी रहेगी। वह निर्देश देगी कि वह शरीर के जिस अंग का नाम ले बच्चे उसे छुएँगे, जैसे शिक्षिका कहे 'कान' तो बच्चे अपने कान पकड़ें। शिक्षिका अपने बोलने की गति बढ़ाती जाएँगी।

शिक्षिका शब्दों को बीच–बीच में बदलकर एक ही अंग का दो–तीन बार नाम लेगी। बच्चे सावधान रहकर सही क्रिया करेंगे।

जो बच्चा शिक्षिका के 'नाक' कहने पर 'आँख' छू ले या अन्य कोई अंग तो वह आउट हो जाएगा। उस बच्चे को गोले के बाहर बिठा दिया जाएगा।

इसी खेल को इस प्रकार भी खेला जा सकता है कि क्रिया के साथ कोई नाम जोड़ दिया जाए जैसे 'गीता'। शिक्षिका कहेगी 'गीता कहती है कि कान छुओ' तो बच्चे कान छुएँगे।

यदि शिक्षिका यह नहीं कहती कि 'गीता कहती है' और केवल क्रिया करने को कहती है तो बच्चे क्रिया नहीं करेंगे अन्यथा वे आउट हो जाएँगे। शिक्षिका बदल–बदल कर आदेश देगी। गलत क्रिया करने वाले बच्चे को गोले के बाहर बैठा दिया जाएगा।

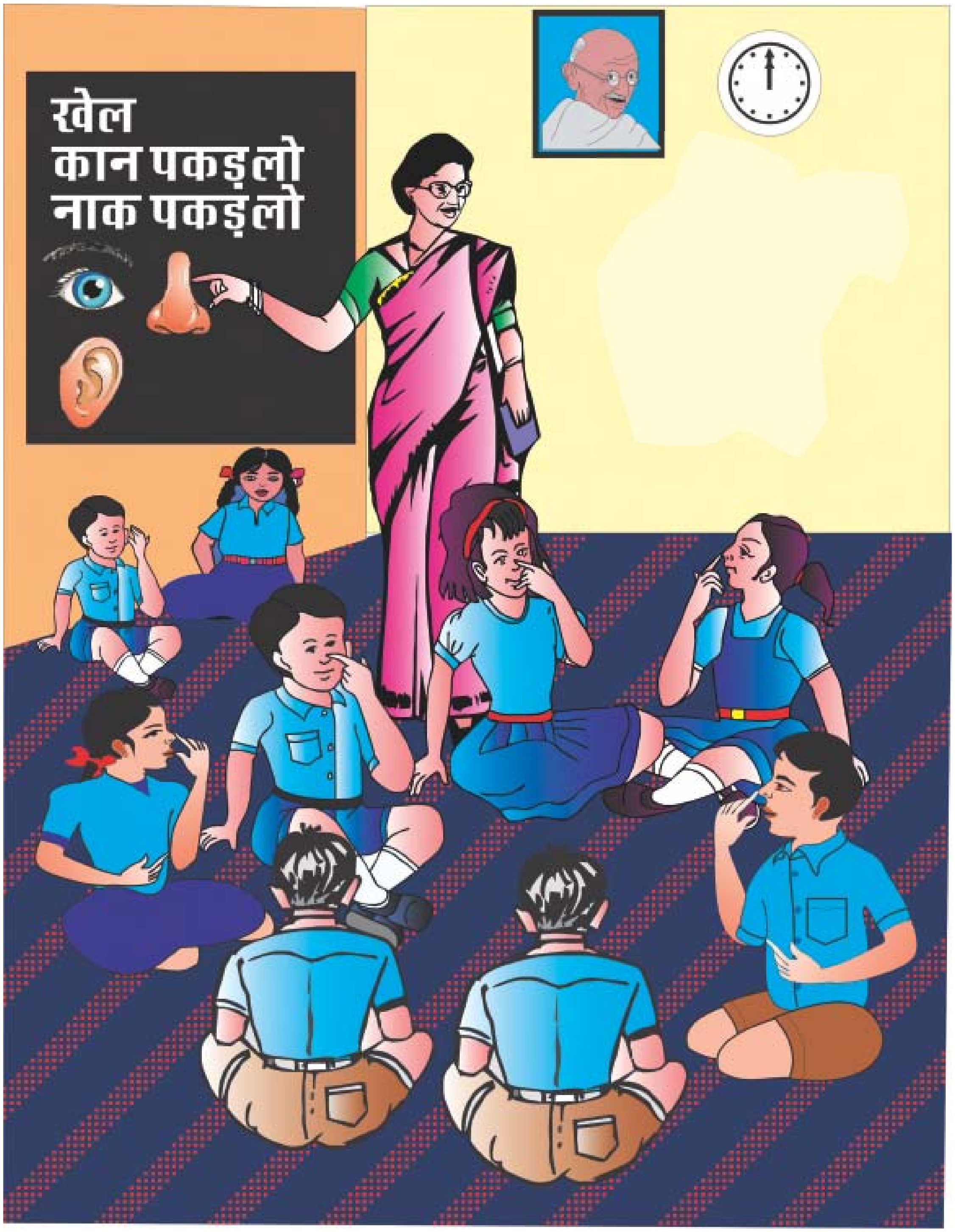
खेल
कान पकड़ लो
नाक पकड़ लो

13 चतुर चिड़िया

एक था बाग उसमें एक पेड़ था। पेड़ पर घोंसला था। उसमें एक चिड़िया रहती थी। चिड़िया के चार बच्चे थे। वह रोज सुबह–शाम दाना लेने जाती। लौटकर घर आती। बच्चों को दाना चुगाती। बच्चे दाना चुगकर बहुत खुश होते। उस घोंसले के नीचे एक चबूतरा था। चिड़िया के बच्चे उस पर बीट कर देते। तिनके बिखेर देते। चबूतरा गंदा हो जाता। मालिक को यह गंदगी बुरी लगी। उसने सोचा इस घोंसले को हटा दिया जाए।

वह अपने लड़के से बोला– "माली से कहना, घोंसला हटा दे।"

चिड़िया घर लौटकर आई। बच्चे घबरा रहे थे। उन्होंने मालिक की बात माँ को बताई। चिड़िया ने कहा– "बच्चो! घबराओ मत। मौज से रहो।'' कुछ दिन निकल गए। घोंसला नहीं हटा। मालिक फिर एक दिन आया उसे

घोंसला वहीं दिखाई दिया। वह लड़के से बोला, "घोंसला अभी तक

नहीं हटा। तुम हटा देना।'' चिड़िया लौटकर घर आई। बच्चे बहुत घबरा रहे थे। बच्चों ने कहा "माँ, आज मालिक फिर आया था और अपने लड़के से खुद घोंसला हटाने को कह गया है।''

चिड़िया बोली– "घबराओ नहीं, यहीं मौज से रहो" कुछ दिन और निकल गए। न कोई आया, न घोंसला हटा। फिर एक दिन मालिक आया। उसने देखा घोंसला अब भी वहीं है।

वह बोला, "इस घोंसले को कल सुबह मैं खुद हटाऊँगा।"

चिड़िया शाम को बच्चों के पास लौटी। बच्चों ने उसे बताया "माँ, कल सुबह मालिक आएगा। अपने हाथों से घोंसला हटाएगा।" यह सुनकर चिड़िया चिंता में पड़ गई।

वह बोली, "बच्चो! अब हमें यहाँ से चल देना चाहिए।" बच्चे सोचने लगे – माँ ने इस बार ही चलने को क्यों कहा ?

दूसरों को बताने की बजाय काम यदि खुद करें तो जल्दी और सही हो जाता है।

अभ्यास–कार्य

शब्द– अर्थ

मौज – आनंद

चुगाना – खिलाना

खुद – अपने आप

1. पढ़ें और समझें

घोंसला, चिड़िया, चुगना, चबूतरा, गंदगी, मौज, खुद, हटाऊँगा, लौटा, चिंता

2. सोचें और बताएँ

(क) चिड़िया रोज सुबह क्यों जाती थी ?

(ख) घोंसले के नीचे क्या था ?

(ग) मालिक घोंसला क्यों हटाना चाहता था ?

(घ) माँ ने घोंसला छोड़ने की बात कब सोची ?

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

(अ) चिड़िया सुबह–शाम कहाँ जाती थी ?

(क) घूमने (ख) घोंसला बनाने

(ग) दाना लेने (घ) नई जगह ढूँढने ( )

(ब) चिड़िया ने पहली बार अपने बच्चों को क्या कहा ?

(क) मौज से रहो (ख) खुश रहो

(ग) डरते रहो (घ) मस्त रहो ( )

(स) मालिक ने घोंसला हटाने के लिए किससे कहा ?

(क) चिड़िया से (ख) लड़के से

(ग) माली से (घ) बच्चे से ( )

4. दिए गए उदाहरण के अनुसार नए शब्द बनाएँ

(क) सुबह – शाम (ख) दिन – ....

(ग) गंदा – .... (घ) कल – ....

(ङ) आना – .... (च) उठना – ....

5. एक शब्द में उत्तर लिखें

1. पेड़ पर किसका घोंसला था ?
2. चिड़िया के कितने बच्चे थे ?
3. घोंसला हटाने के लिए किसने कहा था ?

6. सुंदर लेख लिखें

न कोई आया, न घोंसला हटा।

....

....

....

....

7. पहचानें और नाम लिखें

इसे भी याद करें

चिड़कली

फुर्र–फुर्र करती एक चिड़कली,
म्हारी साळ मांय आयी।
घणै जतन सूं चूंच मांयनै,
दाब तिणकला लायी।
ओलांतर सी रख्या तिणकला,
आळो एक बणायो।
घणे चाव सूँ
घास–पूस सूँ
आळे ने सजायो।
बणियो आळो चिड़ी बणी माँ,
अण्डा लाई तीन,
केई दिनां सेया अण्डा ने,
आँख न लिनी नींद।
फूट्या अण्डा बचिया
निकळ्या,
जद चिड़ी हरखाई।
चीं–चीं करता बचियां ने,
ल्या–ल्या चूण चुगाई।
निकली पांख्याँ बचियां रै

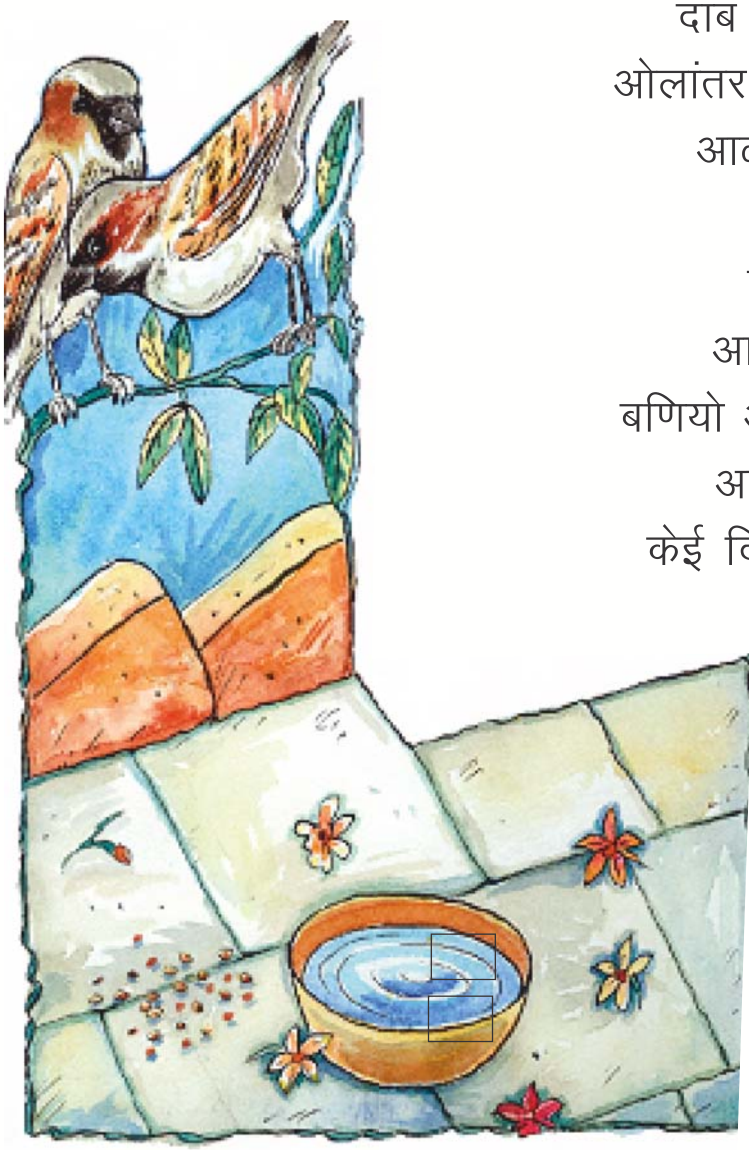

तद,
उडणो चिड़ी सिखाई।
साळ सूँ बारै री दुनियां री,
ऊँच–नीच समझाई
कर हुंसियार उडाया बां नै,
ऊँचा आभै मांयी।
फुदक–फुदककर फुर्र–फुर्र करता।
रूंखां माथै जीवण गीत सुणायी।।
–श्रीभगवान सैनी

14 चार चने

पैसा पास होता तो चार चने लाते।
चार में से एक चना तोते को खिलाते।
तोते को खिलाते तो टाँय–टाँय गाता।
टाँय–टाँय गाता तो बड़ा मज़ा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते।
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते।
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता।
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मज़ा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते।
चार में से एक चना चूहे को खिलाते।
चूहे को खिलाते तो दाँत टूट जाता।
दाँत टूट जाता तो बड़ा मज़ा आता।

– निरंकार देव सेवक

निर्देश :– कविता को हाव–भाव के साथ गाएँ, गवाएँ और छोटे–छोटे प्रश्न इस प्रकार पूछें कि कविता का भाव स्पष्ट हो जाए।

1. कौनसी आवाज़ किसकी है ? पहचान कर मिलान करें

टाँय–टाँय	गधा
कुहूक–कुहूक	घोड़ा
टर्र–टर्र	कोयल
हिन–हिन	तोता
ढेंचू–ढेंचू	मेंढक

2. बोलकर समझें

1. चना चोर गरम।
2. थोथा चना बाजे घणा।
3. लोहे के चने चबाना।

3. सोचें और बताएँ

1. चने खरीदकर किस–किसको खिलाने की बात कही गई है ?

    ....

2. कविता के अनुसार मजा कब–कब आया ?

    ....

3. तुम्हारे पास चार चने होते तो तुम किस–किसको खिलाते ?

    ....

4. तुमने किस–किस की सवारी की है ?

    ....

5. यदि तुम्हारे पास कुछ रुपये होते तो क्या–क्या खरीदना पसंद करते ?

....

4. समूह से मेल नहीं खाने वाले पर घेरा ◯ बनाएँ

भेड़िया   भेड़,   भालू,   कुत्ता,

चूहा,   चम्मच,   कप,   गिलास

5. पंक्तियाँ पूरी करें

1. पैसा पास होता तो .... ।
2. तोते को खिलाते तो .... ।
3. घोड़े को खिलाते तो .... ।
4. चूहे को खिलाते तो .... ।

6. दिए गए उदाहरण के अनुसार शब्द बनाएँ।

मुर्गा	मुर्गी
घोड़ा	....
तोता	....
हिरण	....
चिड़ा	....
बकरा	....

7. कविता में लाते, खिलाते शब्द आए हैं, इनके जैसे ही और शब्द बनाएँ

जैसे– पिलाते

....

....

8. मिलान कीजिए (रुपयों के नाम के साथ नोटों का)

	20
	50
	100
	10
	5

9. तोते के चित्र पर पेंसिल घुमाएँ व रंग भरें।

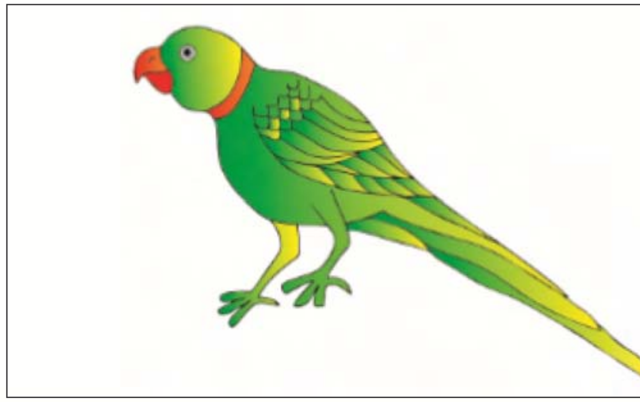

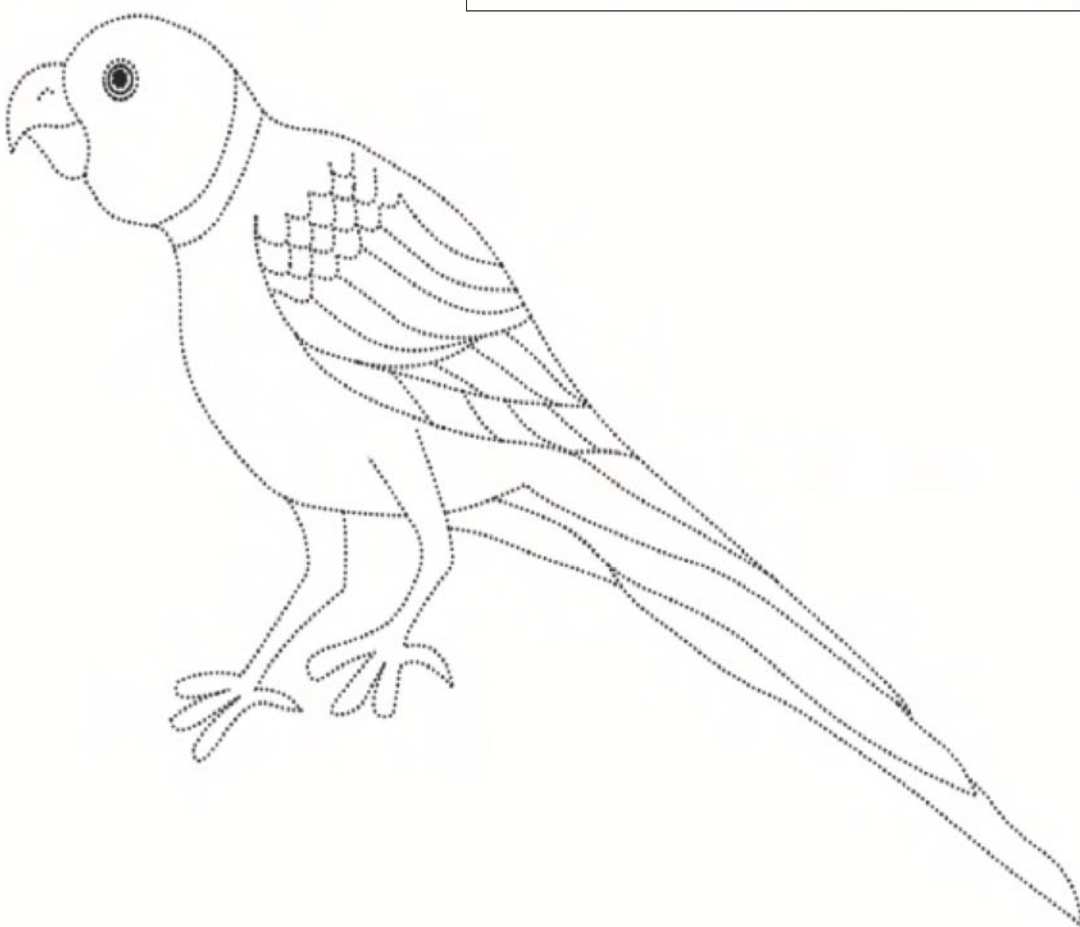

मेरा पन्ना....

पुस्तक का यह पन्ना आपके लिए हैं। चित्र, कविता, कहानी..... जो मन करे, उससे इस पन्ने को भरें।

दिनांक ....अपना नाम............................

15 सपना सच हो गया

एक दिन प्रभा स्कूल में अखबार पढ़ रही थी। पास में बालक–बालिकाएँ भी पढ़ रहे थे। गुरुजी भी वहीं थे।

पढ़ते–पढ़ते प्रभा की आँखें भर आई। टप–टप, टप–टप आँसू गिरने लगे।

"क्यों क्या बात है प्रभा?" पास में बैठी सहेली ने पूछा।

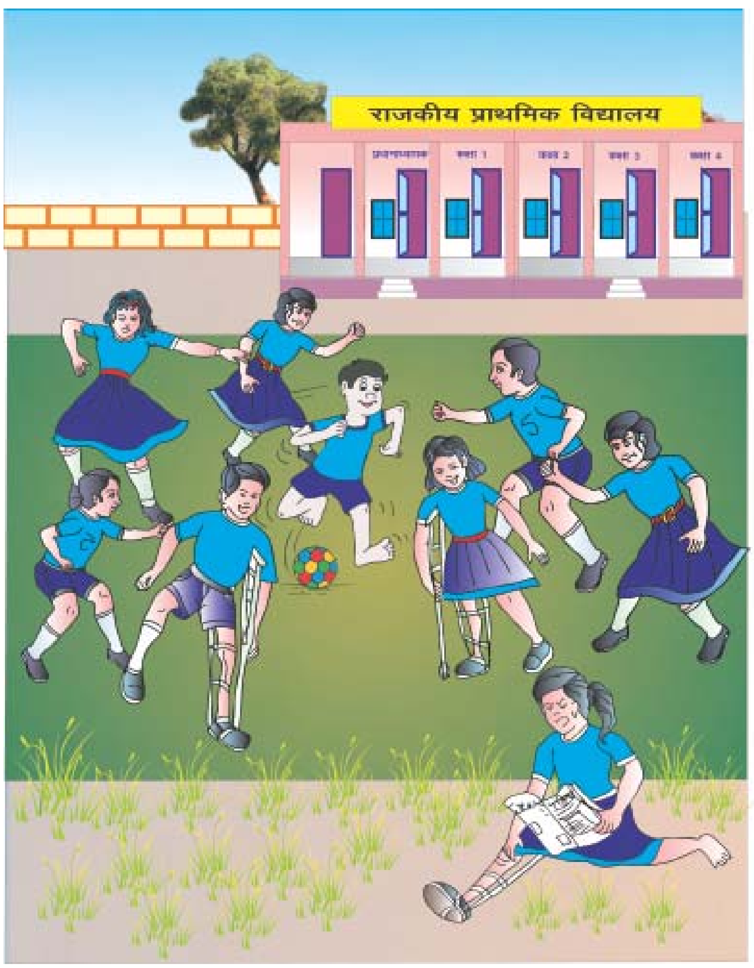

"प्रभा क्यों रो रही हो?" गुरुजी ने पूछा। प्रभा कुछ नहीं बोली। बैसाखी उठाकर चल दी।

गुरुजी की नजर उस अखबार पर पड़ी, जिसे प्रभा पढ़ रही थी। उसमें कृत्रिम टाँगों का चित्र छपा था।

गुरुजी को समझने में देर नहीं लगी। प्रभा भी कृत्रिम टाँग लगवाना चाहती है ,पर उसके माँ–बाप गरीब हैं।

गुरुजी ने सोचा, प्रभा के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए। उन्हें तभी याद आया कि जयपुर में महावीर विकलांग समिति ऐसे जरूरत वालों की सेवा करती है। गुरुजी ने तय किया कि वे प्रभा को लेकर जयपुर जाएँगे। वहाँ संसार प्रसिद्ध "जयपुर फुट" लगवाएँगे।

कुछ दिन बाद प्रभा को कृत्रिम टाँग लग गई। वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने बैसाखी छोड़ दी। अब वह स्कूल के हर काम में हाथ बँटाने लगी।

जब–जब प्रभा अपनी कृत्रिम टाँगें देखती तब–तब उसे कई बातें याद आती। वह सोचती–उसके जैसे और भी जरूरत वाले हैं लेकिन उनके पास कृत्रिम टाँगें नहीं है। वे भी सपने देखते होंगे। उनके सपने कब सच होंगे ?

प्रभा ने निश्चय किया कि बड़ी होकर वह उनके सपने पूरे करेगी। समय गुजरा। बड़े होने पर प्रभा नगर की प्रसिद्ध डाक्टर बनी। उसे यश भी मिला, धन भी।

उसने इसी उद्देश्य से एक संस्था बनाई। प्रभा अपना पूरा समय उसी संस्था को देने लगी। उसके काम और त्याग को देखकर सैकड़ों लोग जुड़ गए।

अब इस संस्था में दूर–दूर के जरूरतमंद आते। कृत्रिम टाँग लगवाते। सब खुश होकर अपने घर लौटते।

वह सोचती कि अब ये बच्चे दौड़ सकेंगे। खेल सकेंगे। पहाड़ों पर चढ़ सकेंगे। इन्हें जीवन में नई रोशनी मिल गई है। आज उसका सपना सच हो गया।

अभ्यास–कार्य

शब्द– अर्थ

आँखें भर आना	–	आँखों में आँसू आना
बैसाखी	–	वह लाठी जिसकी मदद से चलते हैं।
कृत्रिम	–	बनावटी, हाथ से बनाई गई

1. पढ़ें और समझें

कृत्रिम, प्रसिद्ध, बैसाखी, डाक्टर, संस्था, पहाड़, रोशनी, सैकड़ा

2. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

1. क्या पढ़ते–पढ़ते प्रभा की आँखें भर आई ?

   (क) पत्रिका (ख) किताब

   (ग) अखबार (घ) कहानी

2. अखबार में किसका चित्र छपा था ?

   (क) कृत्रिम टाँगों का (ख) प्रभा की माँ का

   (ग) प्रभा का (घ) प्रभा की सहेली का

3. प्रभा की संस्था का क्या नाम है ?

   (क) मानव कृत्रिम संघ (ख) मानव विकलांग सेवा संघ

   (ग) मानव सेवा संघ (घ) मानव संघ

3. पाठ में से ऐसे ही शब्द छाँटिए

दूर–दूर ....

....

4. विपरीत अर्थ वाले शब्द से मिलान करें

कमजोर	खड़ा
छोटा	उदास
सीधा	मजबूत
बैठा	बड़ा
खुश	उल्टा

5. नीचे लिखे खेलों को खेलने के लिए कौन–कौन सा सामान चाहिए ?

क्र.सं.	खेल	सामान का नाम
1	क्रिकेट	
2	गिल्ली डंडा	
3	फुटबॉल	
4	सतौलिया	
5		
6		
7		

6. प्रभा ने अपनी स्लेट पर कई नाम लिख दिए हैं। ये नाम नीचे दिए गए हैं। इन्हें तालिका में लिखें

शक्कर, कबड्डी, लट्टू, बल्ला, लड्डू, बकरी, बेर, कबूतर, कद्दू, शतरंज, शुतुरमुर्ग, हाथी, दरियाई घोड़ा, हॉकी, लंगूर, दाख, हलवा, दौड़, बास्केट।

अब प्रभा यह सोच रही है कि किस नाम को किस खाने में लिखना है। आपको उसकी मदद करनी चाहिए।

अक्षर	जानवर या पक्षी	खाने–पीने का सामान	खेल का नाम या सामान
ब	बकरी	बेर	बास्केट
क			
श			
ह			
ल			
द			

केवल पढ़ने के लिए

उतावलो सो बावलो

एक थी महिला। उसने एक नेवला पाल रखा था। एक दिन वह अपने छोटे बच्चे को सुलाकर पानी लाने गई और नेवले को बच्चे की रखवाली के लिए छोड़ गई। इतने में एक काला नाग वहाँ आया और बच्चे की ओर बढ़ने लगा। नेवला उस पर झपटा और थोड़ी ही देर में उसने साँप को मार डाला।

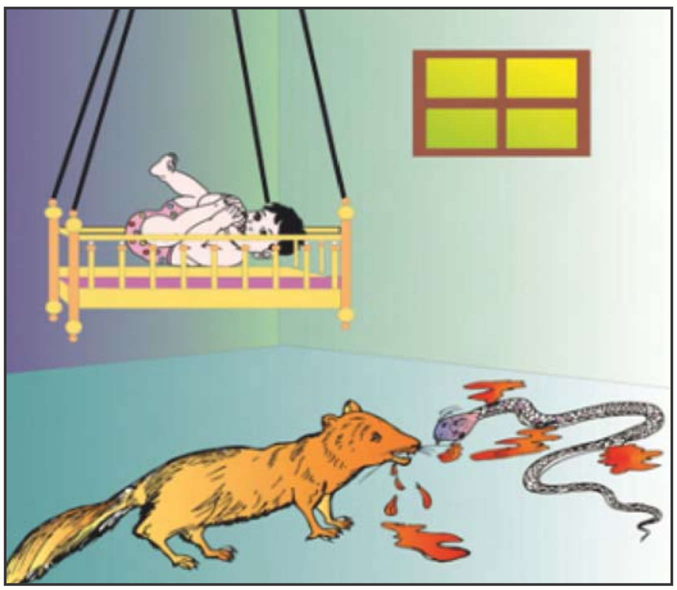

फिर मालकिन को यह सूचना देने के लिए वह बाहर दरवाजे पर आ गया। मालकिन आई और उसने नेवले के मुँह में खून लगा देखा तो उसने समझा कि नेवले ने बच्चे को मार डाला है। उसने क्रोध में आकर पानी का मटका उस पर पटक दिया, जिससे वह वहीं मर गया। अंदर जाकर उसने देखा तो बच्चा सोया हुआ था और पास ही मरा हुआ एक काला नाग पड़ा था। वह सारी बात समझ गई और पछताने लगी लेकिन अब पछताने से क्या हो सकता था?

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय।

16

चाँद का कुरता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
"सिलवा दो माँ मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला।।
सन–सन करती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ।
ठिठुर–ठिठुरकर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ।।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।
न हो अगर तो ला दो कुरता ही, कोई भाड़े का।।"
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, "अरे सलोने
कुशल करें भगवान, लगे ना तुझको जादू–टोने।।"
जाड़े की बात तो ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं, तुमको देखा करती हूँ।।

कभी एक अंगुलभर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा।
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।
घटता–बढ़ता रोज, किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।।
अब तू ही यह बता नाप, तेरा किस रोज लिवाएँ ?
सी दें एक झिंगोला जो, हर रोज़ बदन में आए।।"

– रामधारीसिंह 'दिनकर'

निर्देश :– बच्चों को एक भोले–भाले नटखट बच्चे के रूप में चाँद की कल्पना करने के लिए कहें, ताकि वे कविता का अधिक आनंद ले सकें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

हठ	–	जिद
रोज़	–	प्रतिदिन
बदन	–	शरीर
सफर	–	यात्रा
ठिठुरना	–	काँपना
झिंगोला	–	ढीला–ढाला वस्त्र
भाड़ा	–	किराया
आसमान	–	आकाश
सलोने	–	प्यारे

1. पढ़ें और समझें

गिन	गाता	छोटा	बात	चढ़ता
बुन	सच्चे	मुझको	चंगुल	खोज
मदन	सच्ची	राह	पकड़	

2. पढ़ें और लिखें

1. हठ ....
2. झिंगोला ....
3. ठिठुरकर ....
4. मौसम ....
5. भगवान ....
6. कुशल ....

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ

1. चाँद कैसा झिंगोला सिलवाना चाहता है ?

   (क) मोटा　　(ख) ऊन का

   (ग) रेशम का　　(घ) छोटा

2. चाँद झिंगोला सिलवाने के लिए कह रहा है ?

   (क) अपने पिता से　　(ख) अपने दादा से

   (ग) अपनी माँ से　　(घ) अपनी दादी से

3. 'भाड़ा' शब्द का क्या अर्थ है ?

   (क) दरज़ी　　(ख) सरदी

   (ग) उधार　　(घ) किराया

4. इन पंक्तियों को मिलाएँ

(क) हठ कर बैठा चाँद एक दिन	जाड़े से मैं मरता हूँ।
(ख) सिलवा दो माँ मुझे ऊन का	यात्रा पूरी करता हूँ।
(ग) सन–सन करती हवा रातभर	मोटा एक झिंगोला।
(घ) ठिठुर–ठिठुरकर किसी तरह	माता से यह बोला।

5. सोचें और बताएँ

(क) चाँद ने माँ से ऊन का झिंगोला क्यों माँगा ?

(ख) क्या आपने भी चाँद को घटते–बढ़ते देखा है ?

(ग) आकाश में पूरा चाँद कब दिखाई देता है ?

6. कविता के कुछ शब्द वर्ग पहेली में छिपे हैं, उन्हें ढूँढकर लिखें।

मौ	स	म	चाँ	ऊ
क	भा	ब	द	न
जा	ड़े	च	प	र
दू	आ	स	मा	न

....

....

....

7. नीचे दिए गए शब्द–समूह में जो शब्द उस वर्ग का नहीं है, उस पर गोला ◯ बनाएँ

(क)	तोता	मैना	चिड़िया	हाथी	मोर
(ख)	दाल	चावल	गन्ना	मक्का	गेहूँ
(ग)	किताब	बल्ला	पेन	कॉपी	पेंसिल
(घ)	आम	पपीता	केला	सेव	मटर

8. सोचें और बताएँ

1. कौन रोज घटता–बढ़ता है ?

....

....

2. चाँद किससे हठ कर बैठा था ?

....

....

3. चाँद की माँ क्या सिलवा रही थी ?

....

....

9. बच्चो! आपने चाँद की कौन–कौन सी आकृतियाँ देखी हैं ? उन्हें अपने नन्हें हाथों से बनाएँ।

10. सुंदर लेख लिखें

नाप तेरा किस रोज लिवाएँ।

....

....

....

11. बच्चों को चाँद शीर्षक पर कोई अन्य कविता याद कराएँ ? और अभिनय सहित सुनाने के लिए प्रेरित करें।